चकमक

मई, 2005

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00

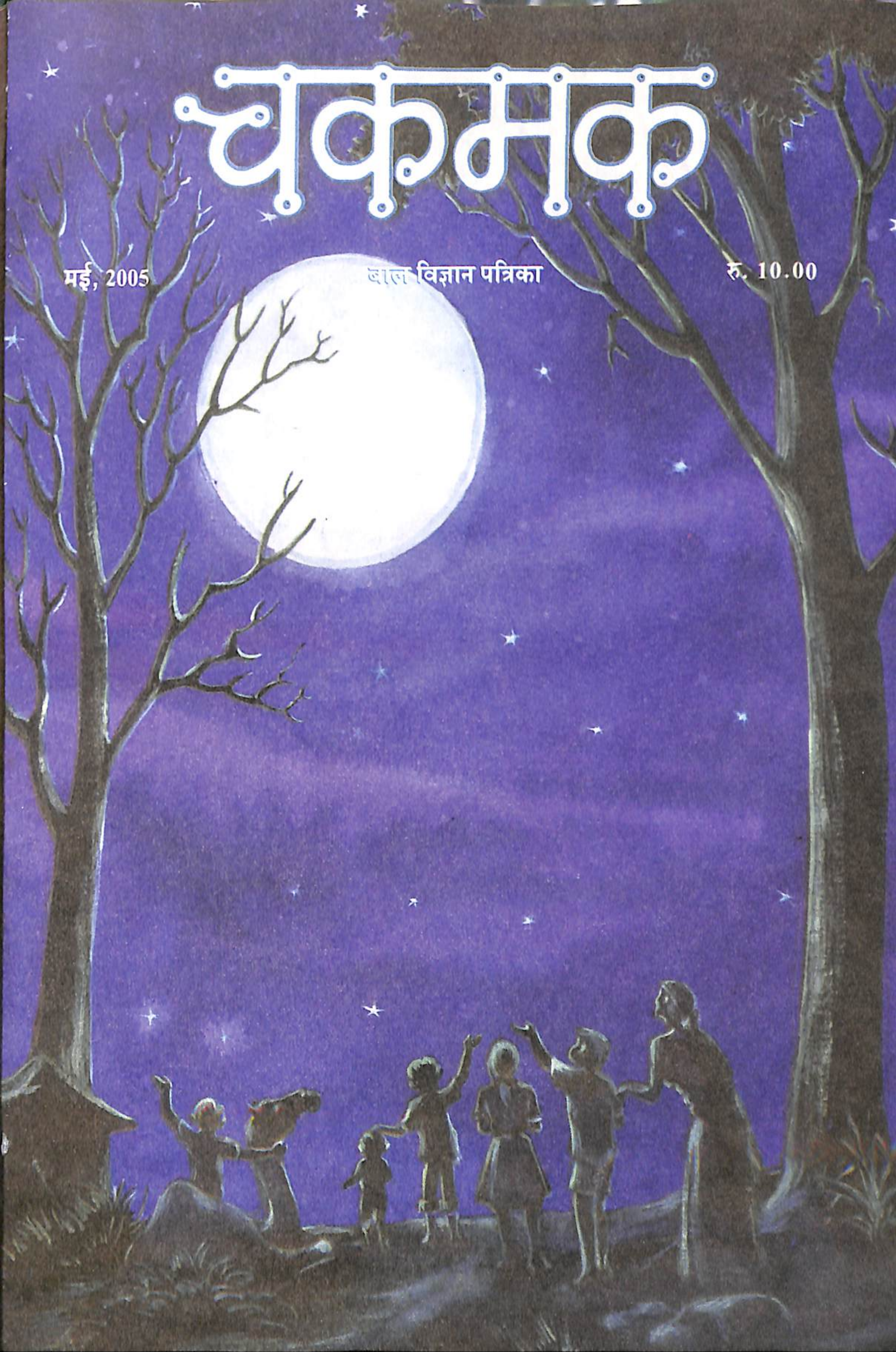

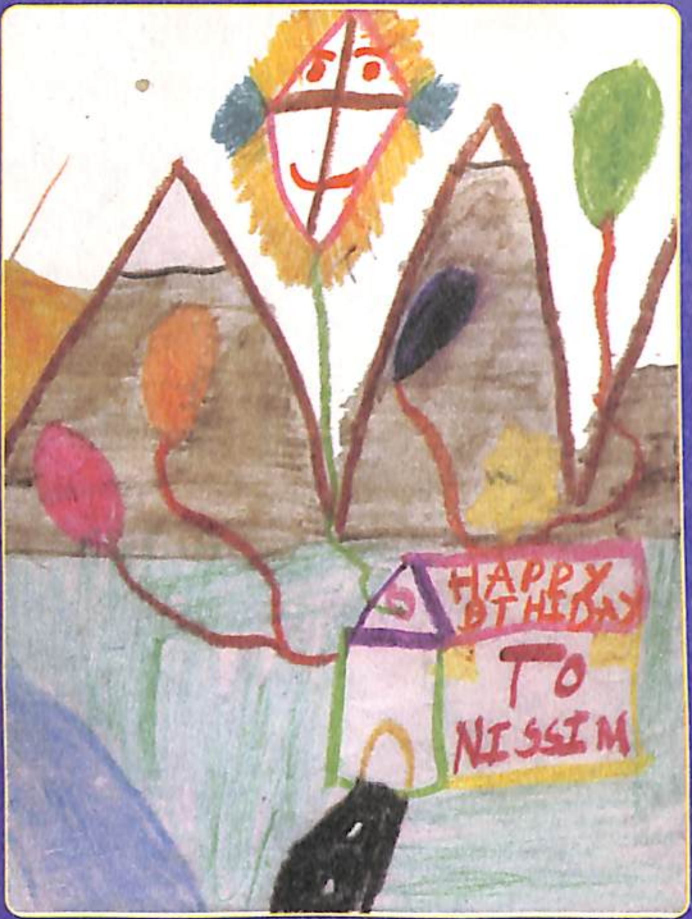

निस्सीम आर, तीसरी, नोएडा, उ.प्र.

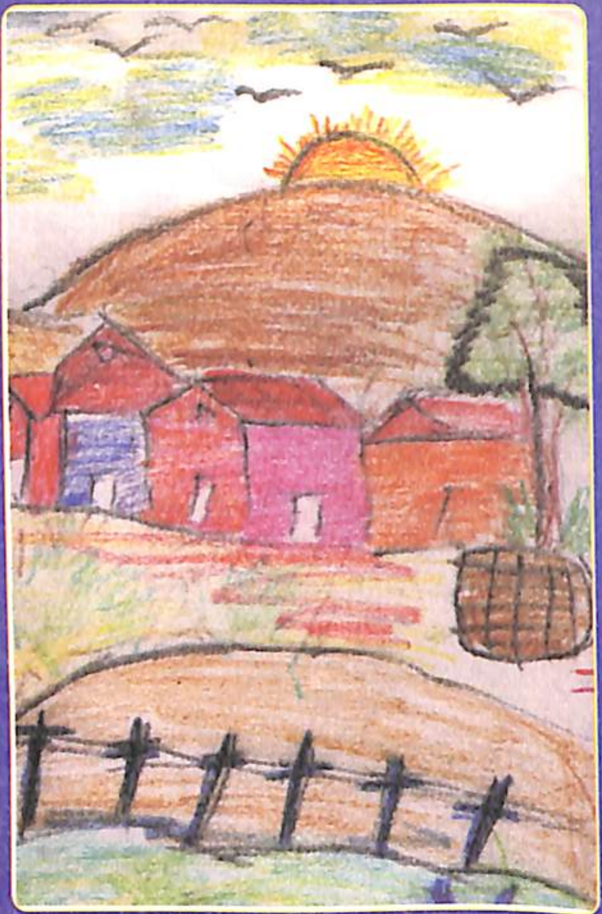

अपूर्वा पटेल, नवमीं, उज्जैन, म.प्र.

रफीकपाल सिंह, के.जी.-2, सिरसा, हरियाणा

आवरण- विवेक वर्मा

चकमक
वर्ष - 20 अंक -9
मई, 2005

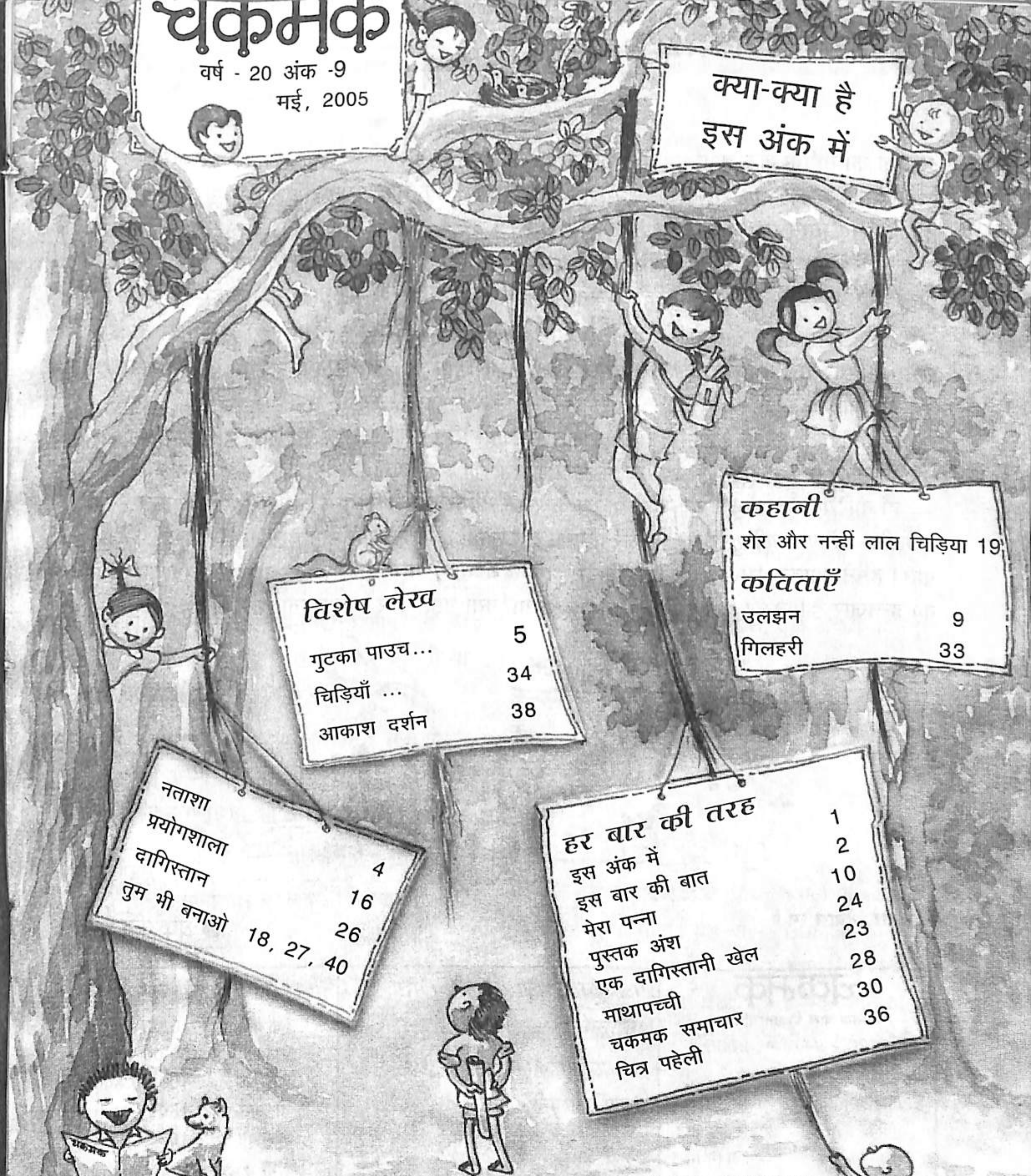

क्या-क्या है इस अंक में

कहानी
शेर और नन्हीं लाल चिड़िया 19

कविताएँ
उलझन 9
गिलहरी 33

विशेष लेख
गुटका पाउच... 5
चिड़ियाँ ... 34
आकाश दर्शन 38

नताशा 4
प्रयोगशाला 16
दागिस्तान 26
तुम भी बनाओ 18, 27, 40

हर बार की तरह
इस अंक में 1
इस बार की बात 2
मेरा पन्ना 10
पुस्तक अंश 24
एक दागिस्तानी खेल 23
माथापच्ची 28
चकमक समाचार 30
चित्र पहेली 36

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात...

दोस्तो,

मई का महीना शुरू हुआ नहीं कि छुट्टियाँ शुरू हो गईं। फुरसत ही फुरसत। पर अफसोस कि गर्मी इतनी कि सुबह 10-11 बजे के बाद से शाम के 5-6 बजे तक घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। इसलिए हमने इस बार की चकमक में कई चीज़ें बनाने और करने के लिए दी हैं। *फिरकी, उल्लू, कागज़ के ज़ेवर, प्रयोग, खेल...* सभी घर के अन्दर ही किए जा सकते हैं। और यह सब आसपास मिलने वाली सामग्री से ही हो जाएगा। कुछ करने-बनाने में दिक्कत हो तो घर के बड़ों से मदद ले लेना।

मई में दिन ज़रूर गर्म होते हैं पर रातें और सुबह ठण्डी हो जाती हैं। यह एक बड़ी राहत होती है। रात को अगर छत पर सोते हो तो चाँद-तारों का नज़ारा तुम्हें ज़रूर लुभावना लगेगा। तारों का चार्ट भी हम इस बार दे रहे हैं।

एक और रोचक अवलोकन है चिड़ियों और उनकी आदतों का। इस पर एक लेख है- *पक्षियों का धूल-चींटी स्नान*। तुम भी सुबह या शाम को उनकी आदतों का अवलोकन करके हमें लिखकर भेज सकते हो।

हाँ बोरियत मत होने देना। कहीं पाउच के रास्ते न निकल जाओ। इसके बारे में भी एक लेख है *एक तकलीफ भरे अन्त की शुरुआत*। ज़रूर पढ़ना। कहानियाँ, कविताएँ और समाचार तो हैं ही। हाँ, एक और बात। हमने "पाठक लिखते हैं" शुरू किया है। कुछ बच्चों के पत्र हमें मिले हैं - तुम्हारे पत्र और सुझावों का इन्तज़ार है। ज़रूर लिखना - क्या अच्छा लगा, क्या नहीं, और क्या पढ़ना चाहोगे....

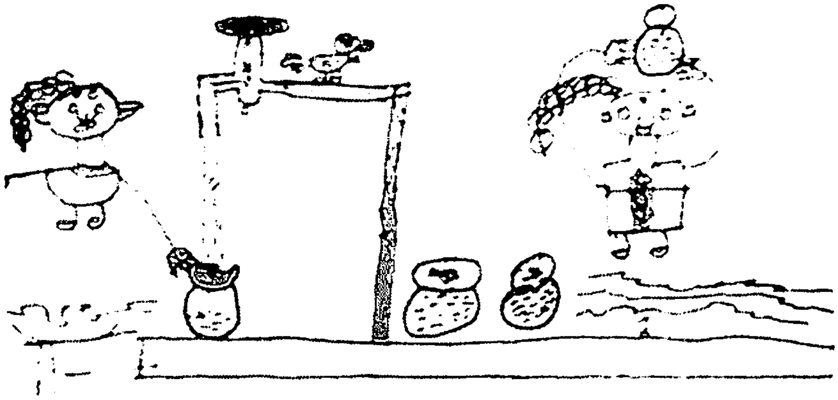

समर्थ परमार, देवास, म.प्र.

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 20 - अंक-9 मई 2005

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
शशि सबलोक
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

सहयोग
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

अप्रैल का अंक पढ़ा। विशेष लेख बेहद पसंद आए। एक कमी मुझे पिछले कई सालों से खल रही है। मैंने कई बार व्यक्तिगत रूप से इस हेतु प्रयास भी किया पर शायद आपने समझने की कोशिश नहीं की। चकमक में बच्चों के सिर्फ चित्रकला कौशल एवं लघु रचना पर ध्यान दिया जाता है। क्यों न उनमें रटंत विद्या के नाम से मशहूर आवेदन पत्र, पारिवारिक पत्र, निबंध के प्रति सहज अनुभव और हौआ का डर मिटना या मिटाना आवश्यक है। अधूरी कहानी पूरी करो, चित्र देखकर कहानी या कविता लिखो।

इन सभी बातों का ये मतलब कतई नहीं कि मैं चकमक की वर्तमान सामग्री से संतुष्ट नहीं हूँ। पर हमें बच्चों के मनोविज्ञान को समझकर उनके विकास की कहानी को अभी से रचना होगा।

- चम्पालाल कुशवाह, हिरनखेड़ा, म.प्र.

❋ ❋ ❋

मुझे चकमक बहुत पसंद है मुझे चकमक की चित्रकला बहुत अच्छी लगती है जो मेरे मन को मोह लेती है। मुझे चकमक की कविताएँ और कहानियाँ बहुत मज़ेदार लगती हैं। चकमक पढ़ने से मेरा आत्मविश्वास बढ़ता है।

- सुमित राठौड़, नौवीं, होशंगाबाद, म.प्र.

मुझे अप्रैल की चकमक मिली। उसे भेजने के लिए शुक्रिया। चकमक में मेरी कहानी छपी - मेरी बिल्ली।

मैं उत्तरांचल में रहती हूँ। और आपने लिखा है कि मैं उत्तरप्रदेश में रहती हूँ। इसी चकमक में एक कविता छपी है *हो गया पूरा पेपर*। वो मुझे बहुत अच्छी लगी। लेकिन मैं सारा पेपर करती हूँ, घण्टी बजने से पहले।

मैं जब भोपाल आऊँगी तो एक अच्छी कविता साथ लाऊँगी।

तारा रस्तोगी, उत्तरांचल

❋ ❋ ❋

चकमक अप्रैल अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका को देखकर सुख मिला। यह बाल पत्रिकाओं की भीड़ में सबसे अलहदा है - प्रामाणिक और ज़रूरी जानकारियाँ देनेवाली, बच्चों को सजग बनाने वाली पत्रिका। एच.एस. राधा की कहानी एक गुस्सैल किताब अत्यंत दिलचस्प है। रचनाकार को बधाई। आपने बच्चों के योगदान को प्रमुखता दी है, जो शायद ही कोई और पत्रिका करती हो।

सतीश चंद्र टण्डन, इलाहाबाद, उ.प्र.

नताशा
• देवांशु वत्स
एक दिन...
F/5
लड़की, क्या तुम्हारे पापा घर में हैं?
हां...
तब मैं एक घंटे से चिल्ला रहा हूं...
वह बाहर क्यों नहीं निकलते?
© DEVANSHU VATSA
....क्योंकि यह मेरा घर नहीं है....
E/5
....मेरा घर तो वह सामने है!!
E/5

एक तकलीफ भरे अन्त की शुरूआत - पाउच या गुटका

बात बहुत पुरानी नहीं है। 1970 के दशक में बिना पत्ते का सूखा पान - पानपराग - पहली बार बाज़ार में आया। सुपारी, कत्था, चूना और कुछ सुगंधित पदार्थों की पुड़िया। इसे पान के बदले खाने वाली चीज़ के रूप में बताया गया। टी.वी., पत्रिकाओं आदि में इनके विज्ञापन आम हो गए। याहू...नाम से मशहूर शम्मी कपूर ने इसे लोगों के बीच लोकप्रिय बनाने का ज़िम्मा सम्भाला।

कुछ दिनों बाद एक और पानपराग आया। इस बार तम्बाकू के साथ। लोगों ने इसे भी खूब पसंद किया। आसान था इसका इस्तेमाल। दाँतों से चीरा लगाया और मुँह में उड़ेल लिया। पढ़ने के दौरान, काम करते हुए, गपशप करते समय, सफर के दौरान, बच्चे को पढ़ाते समय या खुद पढ़ते वक्त, खेलत वक्त...कभी भी, कहीं भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। सिगरेट पीने वालों को भी यह पसंद आया। इससे वैसी दुर्गंध भी नहीं आती थी जैसी सिगरेट पीने के बाद आती है। फिर तो ऐसे पाउच की बाढ़-सी आ गई। कई सारे ब्रांड वाले गुटके बाज़ार में आने लगे।

अब 25-30 सालों के बाद हाल यह है कि लुभावनी तस्वीर वाले 30-40 तरह के छोटे-छोटे चमकीले पाउच - हर पान, किराने की दुकान, चाय की गुमटी में लोगों को लुभाते नज़र आ जाएँगे। हर ओर ज़हर की इन पुड़ियाओं का जादू सर चढ़कर बोल रहा है। पहले तो बड़े लोग ही इसका इस्तेमाल करते थे। लेकिन अब एक सर्वेक्षण से पता चला है कि भारत में हर दिन 600 नए बच्चे तम्बाकू का इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं। चिन्ताजनक बात यह है कि ये सभी 10-18 साल की उम्र के हैं।

पता नहीं वे जानते हैं कि नहीं कि सिर्फ शौक से शुरू हुई यह आदत धीमे-धीमे उनके शरीर पर कब्ज़ा कर लेगी। एक दिन में खाए जाने वाले पाउचों की संख्या बढ़ती जाएगी। उस वक्त इसे छोड़ना भी इतना आसान न होगा।

कैसे होती है शुरुआत...

“ *दोस्त खाया करते थे। कहते थे मज़ा आता है। पढ़ाई लिखाई में दिमाग लगता है। मैंने मना किया तो कहा अच्छा सिर्फ सुपारी ले ले। वो भी पोंछकर। मैंने खाया तो अजीब-सा लगा। सिर घूमता-सा महसूस हुआ। कुछ दिनों बाद फिर से खाने की इच्छा हुई। इस बार सुपारी पोंछी नहीं। सिर और चकराया। अच्छा लगा...* ”

गुटका खाने वाले ज़्यादातर लोगों की यही कहानी है। शुरुआत, बीच और अन्त तीनों एक-सा। 11 साल के किशोर की भी, 42 साल के अनिल की भी और 32 साल की दुर्गा की भी। कुछ लोग हैं जिन्होंने विज्ञापन को देखकर सोचा - देखते हैं, यह चीज़ क्या है! पहले चखा। फिर कभी-कभी दोस्तों से लेकर खाया। और फिर हालत यहाँ तक पहुँच गई कि...

“ *नहीं खाओ तो चक्कर आते हैं...*
किसी काम में दिल-दिमाग लगता ही नहीं...
बेचैनी होती है...
कई बार सोचा छोड़ दें पर नहीं हो पाता। दिन में चार-पाँच पाउच हो जाते हैं... ”

आखिर गुटके या पाउच में ऐसा क्या है जो इसका इतना आदी बना देता है?

पाउच में क्या होता है?

पाउच में सुपारी, कत्था, चूना, तम्बाकू जैसे जाने पहचाने पदार्थों के अलावा कई रसायन होते हैं - इसमें जो चीज़ इसका आदी बनाती है वो है तम्बाकू। तम्बाकू की पत्तियों में अन्य पदार्थों के अलावा निकोटिन होता है। एक तैलीय द्रव जो पत्तियों से निकलने पर रंगहीन होता है लेकिन जल्द ही हवा के सम्पर्क में आने के बाद भूरा हो जाता है। यह बहुत ज़हरीला और नशीला होता है। कई कीटनाशकों में इसका इस्तेमाल किया जाता है।

लत पड़ जाना

सिगरेट का एक सुट्टा या गुटके के मुँह में जाने के सात सेकण्ड के भीतर ही निकोटिन मस्तिष्क तक पहुँच जाता है। इससे मस्तिष्क कुछ रसायनों को छोड़ता है। इनसे दिल की धड़कन, रक्तचाप बढ़ जाता है और शरीर तनावरहित हो जाता है। एकाग्रता बढ़ती है। लगता है जैसे शरीर जाग गया हो।

धीरे-धीरे निकोटिन शरीर की ज़रूरत बन जाता है। कुछ देर तक न मिलने पर बेचैनी होने लगती है, चिड़चिड़ाहट उठने लगती है, काम में मन नहीं लगता, गुस्सा आता है। गुटका खाते ही सब शांत हो जाता है। शरीर पर इसके बुरे प्रभाव दिखने के बावजूद इसे छोड़ना मुश्किल होता है।

पाउच के असर

अक्सर गुटके को काफी देर तक मुँह में दबाकर रखा जाता है। कभी गाल के नीचे कभी होठ और मसूड़ों के बीच में। इससे वहाँ खतरनाक रसायन पैदा होते हैं जो

पाउच का जीभ और मुँह पर असर

उस जगह की कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं। वहाँ सफेद धब्बे नज़र आने लगते हैं। उस जगह पर घाव हो जाता है। इससे रसायनों को अपना असर दिखाने का पूरा मौका मिलता है। दाँत घिसने लगते हैं। मसूड़ों और दाँतों के बीच जगह बनने लगती है। साँस में बदबू आने लगती है।

तम्बाकू और सुपारी को चबाने से कुछ कैंसरकारी रसायन मुक्त होते हैं। सुपारी और चूने को मुँह में लगातार रखे रहने से मुँह के अन्दर की झिल्ली में घाव हो जाते हैं। जैसे चोट लगी चमड़ी का लचीलापन खत्म हो जाता है वैसे ही मुँह के अन्दर की त्वचा भी अपना लचीलापन खो बैठती है। इससे मुँह खोलना लगातार मुश्किल होता जाता है।

तम्बाकू को चाहे पाउच के रूप में खाया जाए या पान की दुकानों में मिलने वाली कागज़ की पुड़िया के रूप में - इसके असर एक समान होते हैं। कुछ स्कूली बच्चों ने बताया कि यह 'शुद्ध' गुटका होता है। इससे कोई खराबी नहीं होती। इसका जवाब तो यही हो सकता है दिल बहलाने को गालिब ख्याल अच्छा है। अपने आसपास किसी ऐसे व्यक्ति के मुँह की हालत देखो जो सालों से यह 'शुद्ध' गुटका खा रहे हों।

हर फिक्र को धुएँ में...

1614 में फ्रांस के कुछ गरीब लोगों के हाथ सिगार, हुक्के में इस्तेमाल होने वाले तम्बाकू का बचा-खुचा हिस्सा लगा। उन्होंने उसे कागज़ में लपेटा और पीने लगे। यही थी सिगरेट की शुरुआत।

तम्बाकू पर किए गए कुछ अध्ययनों से पता चला है कि दूसरी बार सिगरेट पीने वाले दो तिहाई बच्चे इसके आदी हो जाते हैं। इसके धुएँ में कई सारे खतरनाक रसायन होते हैं। यह धुआँ सिगरेट पीने वाले के फेफड़ों को तो बरबाद करता ही है, केवल इसके धुएँ के सम्पर्क में आए लोगों के लिए भी यह कम खतरनाक नहीं है। सिगरेट का धुआँ बच्चों के लिए खास तौर पर घातक है। इससे वे साँस के रोगों, दमा आदि से पीड़ित हो सकते हैं। धूम्रपान से फेफड़ों और गले के

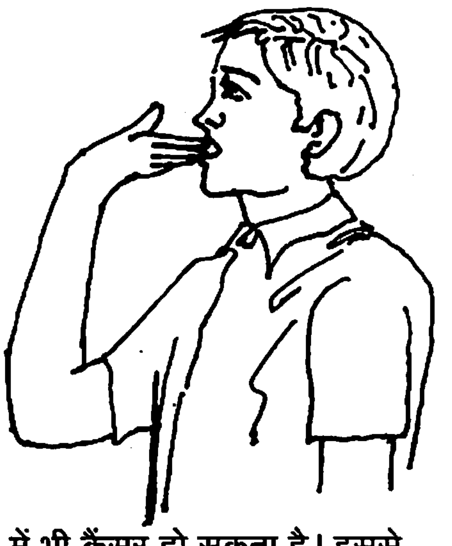

"अब तो मुश्किल से दो उँगल मुँह खुलता है। खाना खाना मुश्किल हो गया है। खाने में स्वाद भी पहले जैसा नहीं आता।"

अलावा, गुर्दे या पेट में भी कैंसर हो सकता है। इससे दिल का दौरा पड़ने की भी गुंजाइश बढ़ जाती है।

एक पोंछी हुई सुपारी या सिगरेट पाने वालों को ज़िन्दादिल इंसान के रूप में पेश करने वाले विज्ञापनें से हुई शुरूआत कहाँ ला पटकती है।

अब बस...

सिगरेट या पाउच छोड़ने के बाद के कुछ दिन या हफ्ते बेहद तकलीफ भरे हो सकते हैं। तुम खुद को तनाव या अवसाद से घिरा पा सकते हो। तुम्हें बार-बार उसे खाने की तीव्र इच्छा करेगी। लेकिन अगर

तुम एक बार इसके चंगुल से छूट गए तो कई खतरनाक बीमारियों के चंगुल से भी छूट जाओगे। एक अच्छी बात यह है कि सिगरेट छोड़ने के कुछ मिनट बाद से ही इसके प्रभाव दिखने लगते हैं।

छोड़ने के बीस मिनट बाद- बढ़ी हुई धड़कन कम हो जाती है

12 घंटे बाद- खून में कार्बन मोनोऑक्साइड का स्तर कम हो जाता है।

1-9 महीने बाद- दिल का दौरा पड़ने का खतरा कम हो जाता है। फेफड़े सही ढंग से काम करने लगते हैं। खाँसी और सांस की गति सामान्य हो जाती है।

5 साल बाद- दिल का दौरा पड़ने का खतरा धूम्रपान न करने वाले के बराबर हो जाता है।

क्या किया जाए

गुटके, सिगरेट आदि के खतरों को देखते हुए इनपर प्रतिबंध लगाने के कई प्रयास किए गए हैं। सरकार की ओर से सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करने पर रोक लगी है। कई राज्य सरकारों ने गुटके पर भी प्रतिबंध लगाया। लेकिन गुटके के सम्राटों ने कानूनी दाँव पेंच से इसे हटवा दिया। मशहूर फिल्मी पुरस्कार कार्यक्रम हो या क्रिकेट प्रतियोगिताएँ या धार्मिक उत्सव, सभी के प्रायोजक यही सम्राट हैं। क्या सिगरेट के पैकिट और पाउच पर *यह सेहत के लिए हानिकारक है* भर लिखा रहना काफी है?

मुम्बई में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि 10-40 प्रतिशत स्कूल जाने वाले बच्चे और कॉलेज के 70 प्रतिशत बच्चे गुटके या पाउच के आदी हो चुके हैं। पता नहीं इन सम्राटों को यह बात पता है या नहीं। इस पर उनका कहना है कि विज्ञापन से लोग केवल ब्रांड बदलते हैं। विज्ञापन नए लोगों को इनका इस्तेमाल करने को नहीं उकसाते हैं। अब तुम्हीं बताओ इसपर क्या कहें...। सच तो यह है कि अधिकाँश कम्पनियाँ विज्ञापनों को किशोरों पर लक्षित करती हैं। जबकि इस पर रोक लगी है। तम्बाकू कम्पनियों की नियत का अंदाज़ा तो इसी से लगाया जा सकता है कि सालों तक वे छिपाती रहीं कि तम्बाकू की लत लगती है।

कई देशों में इन उत्पादों के विज्ञापन में होने वाले खर्च और इनकी माँग के बीच सीधा सम्बंध पाया गया है। वहाँ इन उत्पादों पर रोक के एक से ज़्यादा तरीकों को अपनाने का काफी फायदा दिखा। जैसे विज्ञापनों और कार्यक्रम प्रायोजन करने पर पूरी तरह से रोक, सार्वजनिक स्थानों पर इसके इस्तेमाल पर रोक, इनकी कीमतों में वृद्धि आदि। जब तक क्या हम बैठे-बैठे उस दिन का इंतज़ार करें जब यह रोक लगेगी या फिर इसे छोड़ने या छुड़वाने के लिए अभी से कुछ कदम उठाएँ!

क्या तुम जानते हो...

- गुटके के विज्ञापन पर हर साल करोड़ों रुपए खर्च होते हैं। पाउच का पूरे 100 करोड़ का कारोबार है।
- सिगरेट के धुएँ के सम्पर्क में लगातार रहने से हृदय रोग और फेफड़ों का कैंसर होने की सम्भावना 25 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

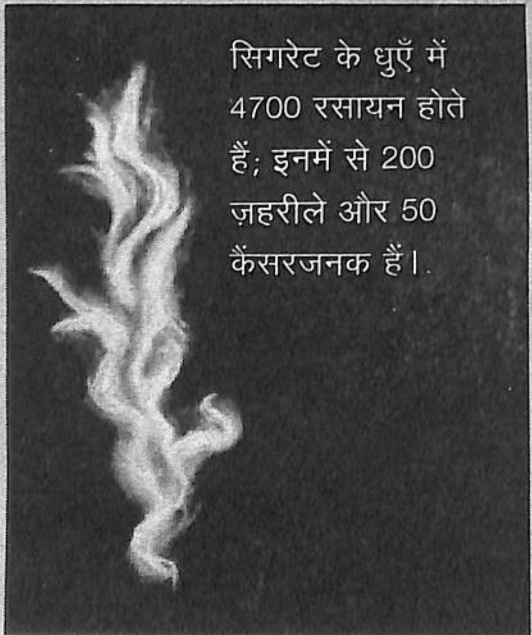

- भारत में लगभग 1 लाख लोग मुँह के कैंसर से पीड़ित हैं। कोई 10 लाख लोग तम्बाकू की वजह से मरते हैं।हर साल लगभग 56000 नए मरीज़ तैयार होते हैं। डॉक्टरों के अनुसार मुँह के कैंसर के 90 प्रतिशत मामले तम्बाकू, गुटका, पान मसाला चबाने से होते हैं।
- दुनिया को तम्बाकू और तम्बाकू से होने वाली बीमारियों व मौतों से मुक्त करने के लिए हर साल 31 मई को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरुआत 1988 में हुई थी।

चुनाव तुम्हारा है

तम्बाकू या तंदुरुस्ती

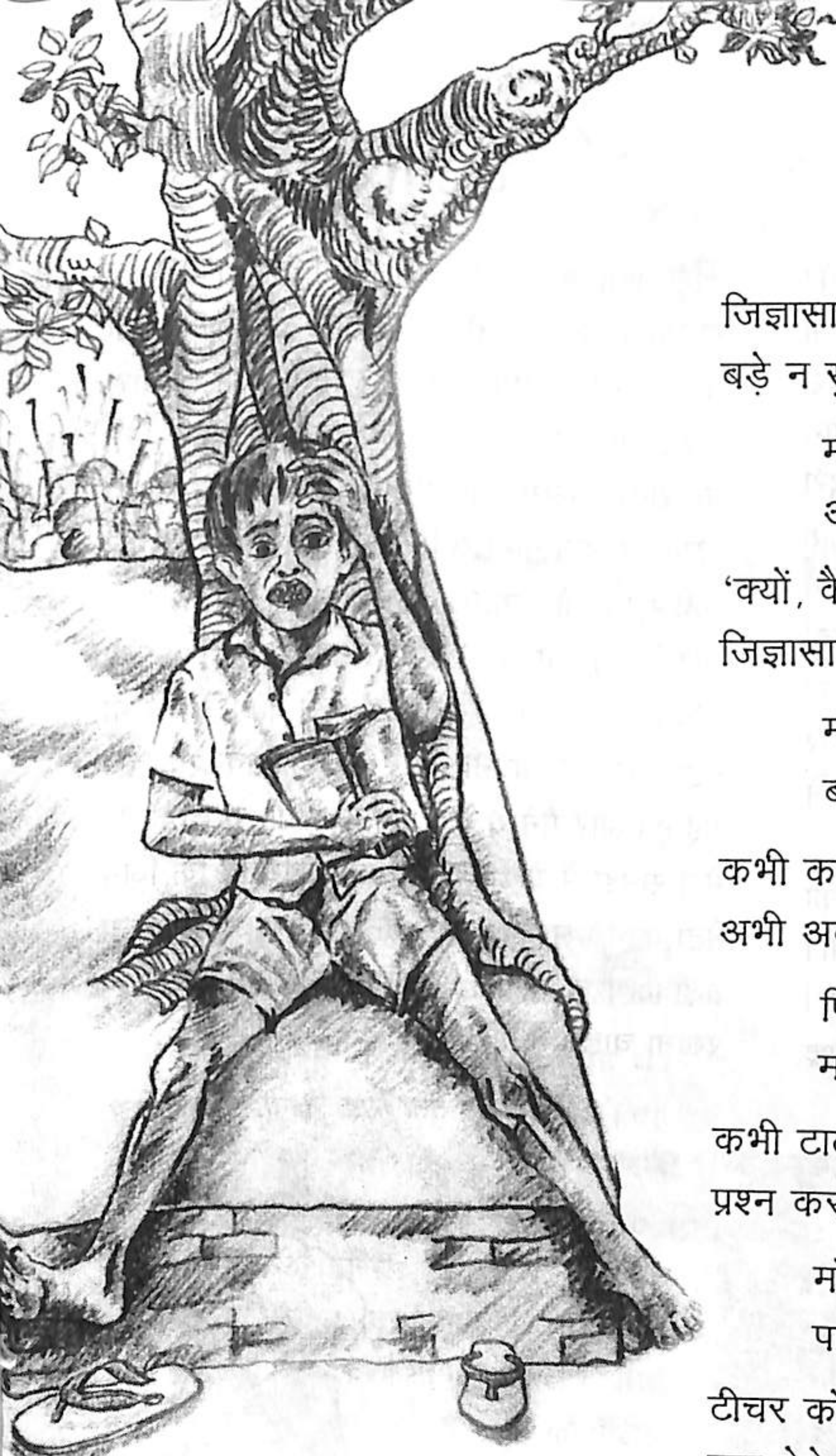

उलझन

जिज्ञासा हो कैसे शांत?
बड़े न सुनना चाहें बात।

मन में उठते कई सवाल
आ जाता दिल में भूचाल।

'क्यों, कैसे' के प्रश्न कई
जिज्ञासाएँ नई–नई।

मगर बड़ों को क्या मतलब
बात हमारी सुनते कब

कभी कहें, तुम बच्चे हो
अभी अकल के कच्चे हो।

फिर कहते कि वे हैं व्यस्त
मगर व्यस्तता से हम त्रस्त।

कभी टालते, झल्लाते,
प्रश्न करो तो गुस्साते।

माँ, पापा, दादा, भाई
पास किसी के समय नहीं।

टीचर कोसें कह नटखट
कर देते चुप डाँट–डपट।

अब किससे हम प्रश्न करें।
जिज्ञासा उमड़े–घुमड़े।

कब वह दिन आएगाजी
हमें सुना जाएगा जी?

भगवती प्रसाद द्विवेदी
चित्र– सतीश ढोके

मेरा खेत

मेरा खेत गिरवी गाँव में है। मेरे खेत में खंडू और बंडू ऐसे दो बैल है। गाएँ हैं और एक बड़ा कुत्ता भी। ज्वार और अनार खेत में लगे हैं। खेत के पास के पहाड़ पर एक मंदिर है। वहाँ दूर-दूर से लोग दर्शन के लिए आते हैं। खेत से आधा घण्टे की दूरी पर धूमालवाड़ी गाँव है वहाँ के झरने देखने पिकनिक मनाने लोग आते हैं। मैं और मेरा छोटा भाई खेत में जाते हैं। वहाँ से वापस घर आने का मन नहीं करता। मम्मी मुझे डाँटती है कि चलो घर कल स्कूल है। तब भी मैं दूसरे दिन तक रहती हूँ फिर सुबह 10 बजे वहाँ से निकलती हूँ और ग्यारह बजे अपने घर, फिर वहाँ से स्कूल जाती हूँ।

मैं हमारी तावरे बाई और कक्षा के बच्चों को रविवार के दिन अपने खेत घुमाने ले जाऊँगी। देखना उनका भी मन वापस आने को नहीं करेगा।

आरती जगदीश कदम, फलटण, महाराष्ट्र

बँटवारा

मेरी नानी के तीन बेटे और दो बेटियाँ हैं। बेटे और बेटियों की शादी के तीन-चार साल बाद मेरे नानाजी का देहान्त हो गया। अब मेरे मामाओं ने बँटवारा कर दिया। तीनों अलग-अलग रहने लगे और नानी को सबसे अलग एक छोटा-सा मिट्टी का घर दे दिया। वे लोग नानी से मिलने भी या हाल भी पूछने नहीं आते और मामियाँ हमेशा नानी को डाँटती, मारती, कोसती रहती हैं। मेरी नानी की इस समय तबियत बहुत खराब है। और उसे कोई देखने भी नहीं जाता। मैं अपनी नानी के यहाँ सिर्फ एक बार गई हूँ। और मैंने ये सब अपनी आँखों से देखा है। मेरी समझ में ये आज तक नहीं आया है कि जिन बेटों को खिला-पिलाकर और पाल पोसकर इतना बड़ा किया वही आज अपनी माँ को अपने साथ नहीं रखना चाहते हैं। ऐसा क्यों?

रीता सिंह, नवमीं, देवास, म.प्र.

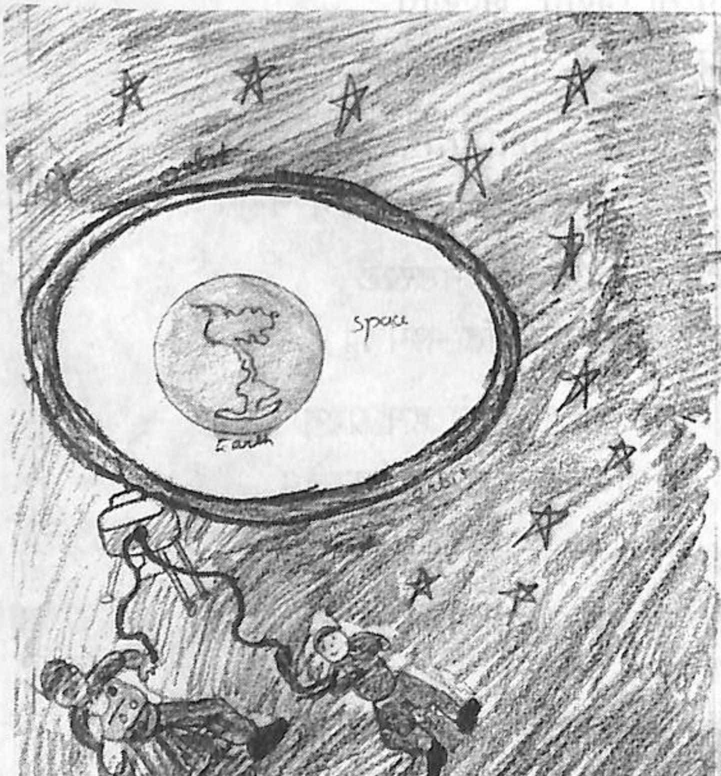

जीनत खान, तिलवारा, जबलपुर, म.प्र.

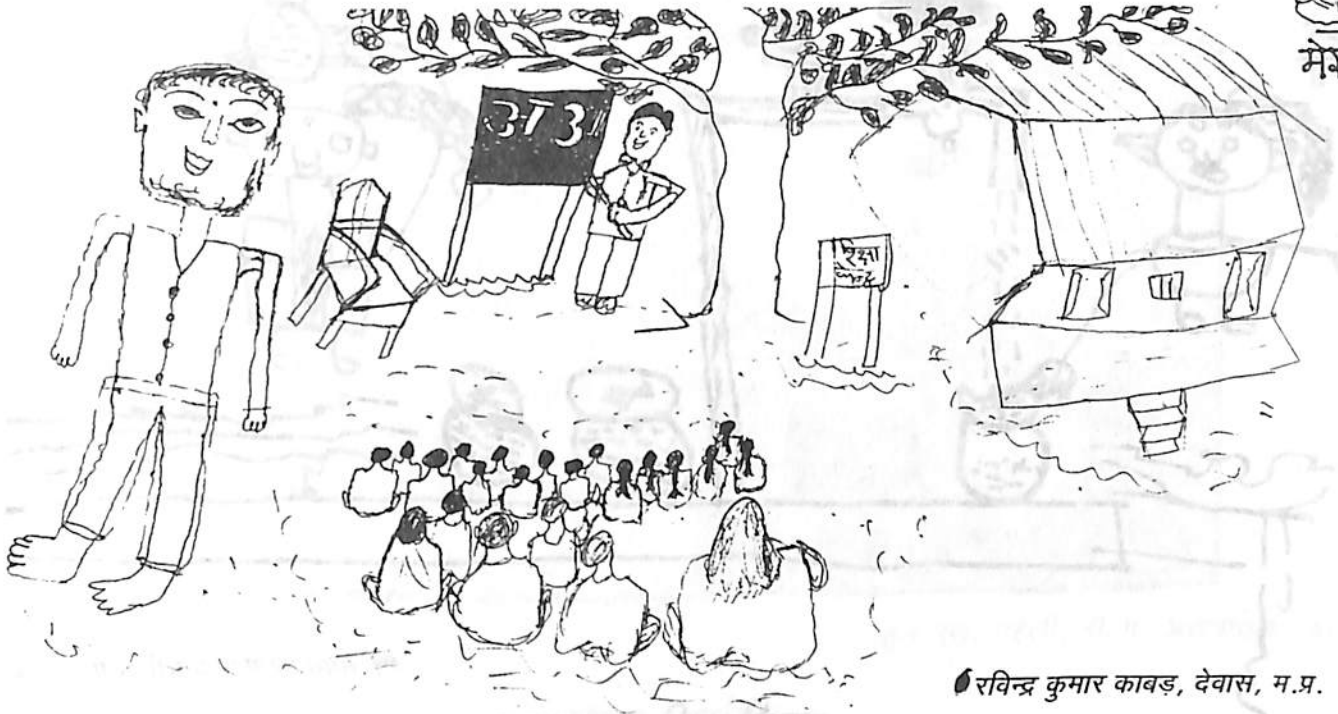

रविन्द्र कुमार काबड़, देवास, म.प्र.

गाँधीजी की कहानी

जब गाँधीजी बचपन में बच्चों की तरह थे। जब वह बच्चों की तरह स्कूल में जाते थे। वह एक बार पेंसिल नहीं लाए तो उन्होंने सबसे पूछा कि आपके पास दो पेंसिल हैं पर किसी ने भी गाँधीजी को पेंसिल नहीं दी। जब एक बच्चे को गाँधीजी पर दया आई तो उसके पास एक छोटी-सी पेंसिल थी तो वह पेंसिल गाँधीजी को दे दी। फिर दूसरे दिन गाँधीजी की पेंसिल खो गई। तो वह छुट्टी में ढूँढने लगे। फिर उनके सर आए और बोले - बेटा तुम्हारा क्या गुम हो गया है? गाँधीजी ने कहा - मेरी पेंसिल गुम हो गई है। उसे ढूँढ रहा हूँ। तब मास्टर को पेंसिल का एक टुकड़ा मिला तो मास्टर ने कहा यह है तुम्हारी पेंसिल गाँधीजी ने कहा - हाँ।

मयंक अतुलकर, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

अंशुसिहं परिहार, चौथी, भोपाल, म.प्र.

समर्थ परमार, बागली, देवास, म.प्र.

पानी की समस्या

हमारे शहर देवास में पानी की बहुत कमी है। और हमारे मोहल्ले में पानी की बहुत ज़्यादा कमी के कारण रोज़ लड़ाई झगड़े होते हैं। वर्षा की कमी के कारण पानी की कमी है। कभी-कभी तो इतना पानी गिरता है कि लाल गेट गिर जाता है और लाल गेट गिरने से लोगों की जान चली जाती है। इसलिए पानी अधिक भी नहीं गिरना चाहिए एवं कम गिरना चाहिए। पानी की समस्या होने के कारण लोगों को हैंडपंप सरकारी नलों पर जाना पड़ता है। और वहाँ पर अधिक भीड़ होने के कारण लोगों को कई देर तक खड़े रहना पड़ता है। पानी की वजह से किसानों को भी बहुत नुकसान उठाना होता है और अनाज लोगों को महँगे दाम में मिलता है। और पानी की कमी के कारण कई कम्पनी बंद हो गई है और कई लोग बेरोज़गार हो गए हैं। अब तो लोग पानी को भी बेचते हैं। और बेरोज़गारी के कारण गरीबी बढ़ रही है। और कई लोग भूखे मर रहे हैं।

गौरव यादव, नवीं, देवास, म.प्र.

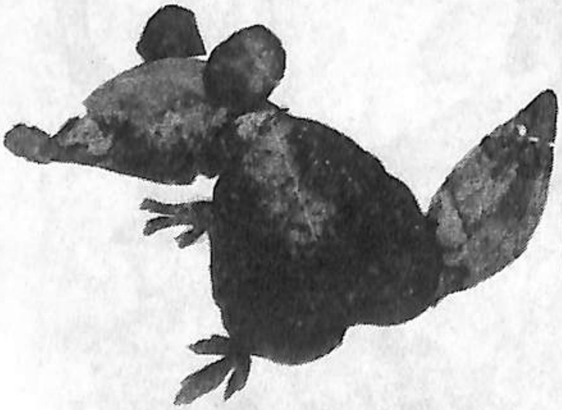

सोनाली रजक, अभ्युदय बाल निकेतन, भोपाल, म.प्र.

खरगोश और लोमड़ी

एक बार की बात है। खरगोश और लोमड़ी मेला देखने गए। जाते समय उन्होंने दौड़ लगाई खरगोश तेज़ भागने लगा। और एक पेड़ के नीचे सो गया। लोमड़ी मेले में चली गई। और आ भी गई। खरगोश जब जागा तो उसने देखा कि लोमड़ी मेले में से आ गई है। और बाद में वह पछताने लगा।

प्रियंका नागरे, पाँचवीं, छिंदवाड़ा, म.प्र.

राहुल पुलु, पहली, रोइंग, अरुणाचल प्रदेश

मेरा प्रयोग

एक बार की बात है, मैं बैठे-बैठे सोच रहा था कि मैंने एक प्रयोग कर डाला और मज़े की बात तो यह थी कि मम्मी घर पर नहीं थी। और मेरा भाई भी घर में नहीं था। वह पार्क गया था। मैं बहुत देर तक बैठे-बैठे कुछ सोचता रहा। तभी मेरे दिमाग में कुछ-कुछ आने लगा। मैंने सोचा कि अगर मैं सेन्ट में आग लगा कर देखूँ तो क्या होगा। मैंने पढ़ा था कि सेंट में एल्कोहल होता है।

मेरे दिमाग में चल रहा था कि क्या वो जलेगा? फिर मैंने सेंट की बोतल उठा ली, उसके बाद उसके ढक्कन में थोड़ा-सा सेंट डाला और फिर उसे जमीन पर फेंक दिया। फिर मैंने माचिस की तीली जलाई तथा उसे सेंट पर फेंक दिया। वह तीली बड़ी देर तक जलती रही। फिर मैंने सोचा की सेंट भी उस पर थोड़ा-सा डाल दूँ। मैंने उस जलती तीली पर थोड़ा सा सेंट डाला, तो वह आग उस बोतल तक आ गई। इसी तरह मुझे यह पता चल गया की सेंट में एल्कोहल होता है तथा उसे आग से दूंर रखना चाहिए।

पीयूष दीक्षित, आठवीं, उन्नाव, उ.प्र.

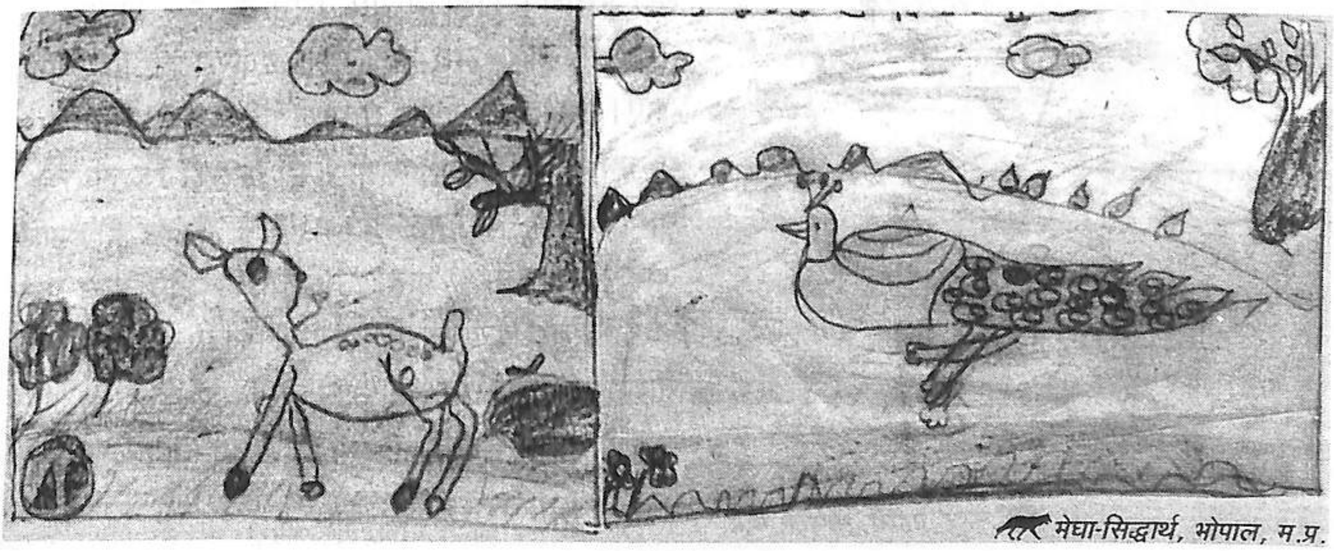

मेघा-सिद्धार्थ, भोपाल, म.प्र.

मई महीना

लो फिर आया मई महीना,
टप-टप टपके खूब पसीना,
गला सूखता पल-छिन में,
पड़ता गट-गट पानी पीना।
लो फिर आया मई महीना,
दूभर हो गया सबका जीना,
कोई माँगे आइसक्रीम
कोई कहे मुझे लस्सी पीना।
लो फिर आया मई महीना,
सूर्य खड़ा है ताने सीना,
लू दिन भर दरवाजा खटकाए,
घर से बाहर ना जा मीना।

प्रस्तुति- अपूर्व श्रीवास्तव, दसवीं, जबलपुर, म.प्र.

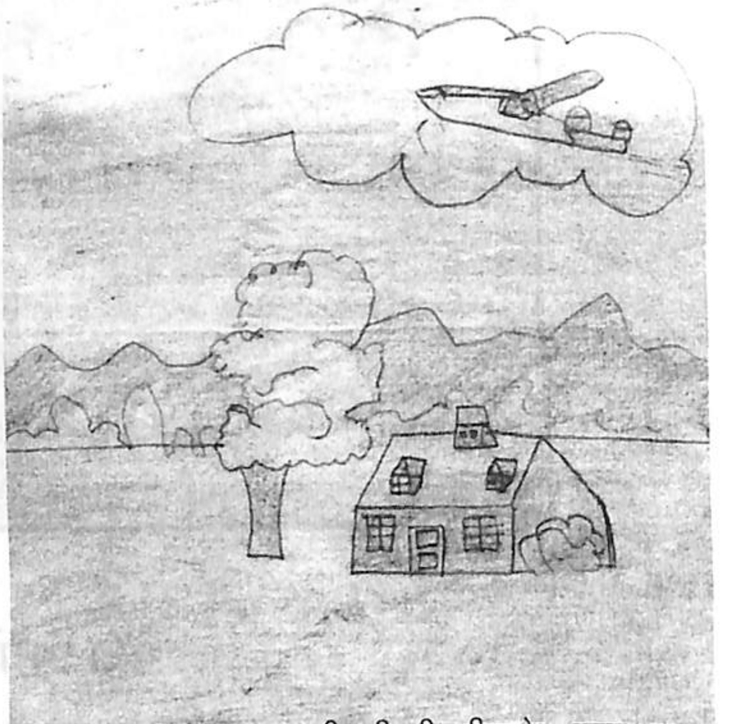

जूही, तीसरी, बीकानेर, राजस्थान

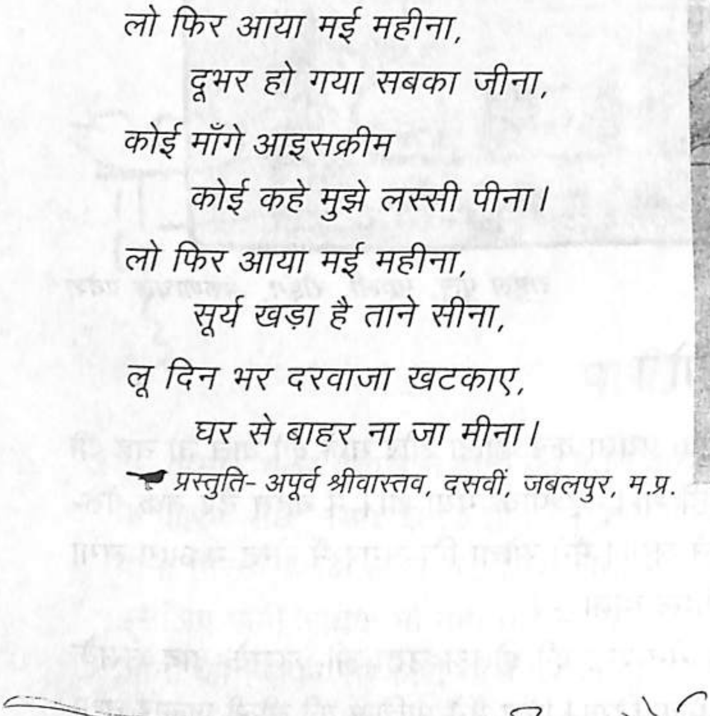

मैहर, पहली, भोपाल, म.प्र.

मैं गिर पड़ी

मैं जब स्कूल से घर आई तो खाना खाकर बैठी ही थी कि अचानक बारिश शुरू हो गई। मैं और मेरे छोटे भाई को बारिश में भीगने का मन हुआ। पर मम्मी से पूछने पर उन्होंने मना कर दिया। तब हमने उन्हें मनाने की कोशिश बहुत की। बहुत से चुटकुले सुनाए। गाना गाया। फिर भी नहीं मानी। मम्मी काम करके थक गई थी। इसलिए थोड़ा आराम करने के लिए बिस्तर पर लेटी और आँख लग गई। मज़ाक करते हुए फिर पूछा जाए। मम्मी नींद में थी। मम्मी ने हाँ बोला कि ना समझ में नहीं आया। पर मैं, मम्मी ने हाँ कर दी चिल्लाते हुए भागी। मम्मी ने हाँ कर दी। मम्मी ने हाँ कर दी। आगे जाकर में धड़ाम... आह!...मम्मी उठी और आस-पास वाले भी मुझे देखकर हँस रहे थे। मुझे रोने के साथ-साथ अपने ऊपर भी हँसी आने लगी। वो दिन मुझे आज तक याद है। हम सभी उस दिन को याद कर बहुत हँसते हैं।

जयविश खलगो, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

हमारी राणी

एक बार हम कुतिया लाए। उसका नाम राणी रखा था। वह सफेद रंग की थी। वह बहुत अच्छी थी। पहले-पहले मुझे उससे बहुत डर लगता था। लेकिन बाद में सिर्फ मेरे ही पास आती थी। मैं उसे दूध-रोटी देकर ही पाठशाला जाता था। वह हमारे घर का दरवाजा खुलते ही भौंकने लगती थी। और हमें सावधान कर देती थी। वह पूरा दिन खुली रहती थी। रात को हम जब हमारे दूसरे कुत्ते को छोड़ते थे तो वह घर में आकर सोती थी। हमारा दूसरा कुत्ता बहुत डेंजर था। वह जर्मन शेफर्ड था। वह घर में किसी को काटता नहीं था। राणी हमारे घर के सदस्य जैसे ही थी। वह हमारा सब कुछ सुनती थी। और वैसे ही करती थी। मुझे उसके बिना अच्छा नहीं लगता था। जब घर में नए व्यक्ति आते, तब राणी उन पर भौंकती थी। और जो आदमी उसके पास आ जाता था। तो वह उन्हें काटती थी। आज वह हमारे बीच नहीं है। मुझे उसकी खेलने की बॉल, खाने का कटोरा दिखा तो अभी बहुत दुख होता है। आज भी मैं स्कूल से घर जाता हूँ तो ऐसा लगता है कि वह दौड़कर मेरे पास आए।

मंजीत किरण बर्गे, छटवीं, फलटण, महाराष्ट्र

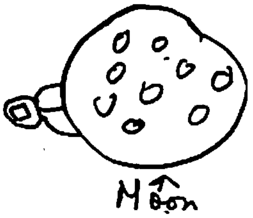

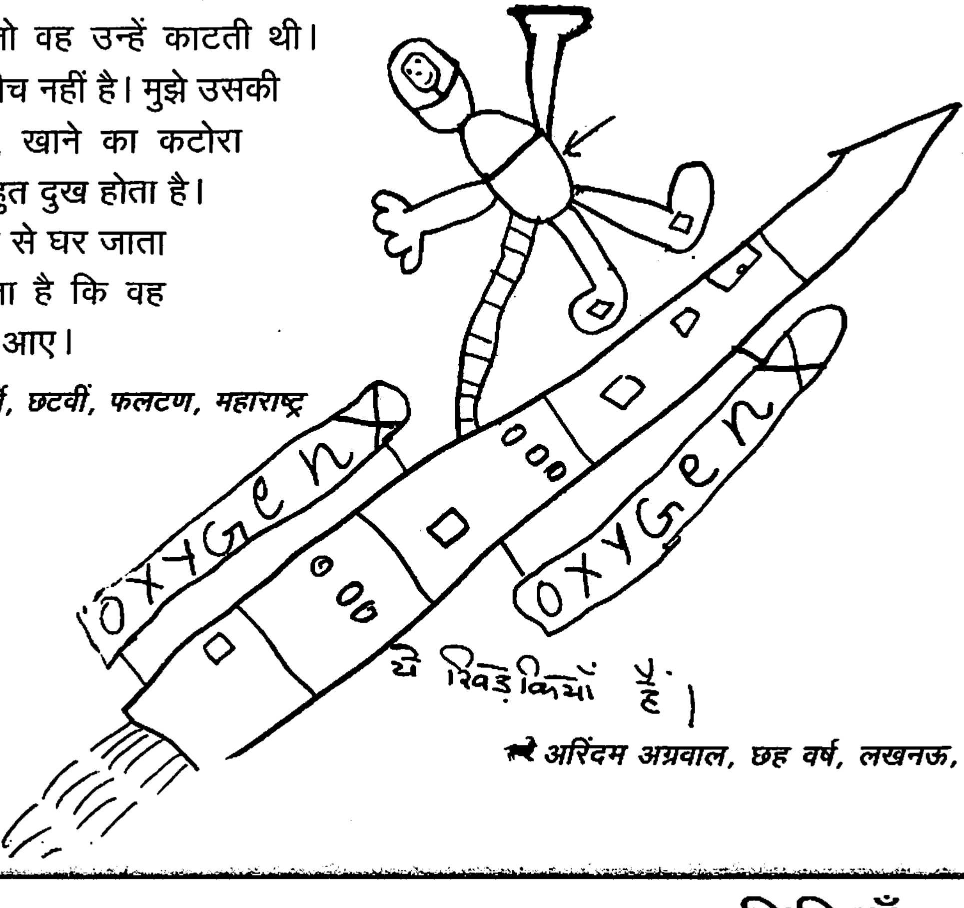

अरिंदम अग्रवाल, छह वर्ष, लखनऊ, उ.प्र.

भालू

एक था भालू
खा गया आलू
गरम था आलू
जल गया तालू।

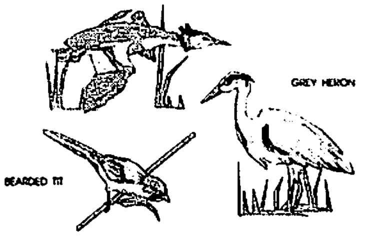

चिड़ियाँ

उड़ती चिड़ियाँ
मुड़ती चिड़ियाँ
एक साथ आ
जुड़ती चिड़ियाँ

दोनों कविताएँ : महिमा टण्डन, चौथी, इलाहाबाद, उ.प्र.

अपनी प्रयोगशाला

गर्मियों की लम्बी दोपहर के लिए इस बार कई छोटे-छोटे मज़ेदार प्रयोग।

आवाज़ कहाँ से आई

किसी दोस्त की आँख पर पट्टी बाँधकर उसे कमरे के बीचोंबीच खड़ा कर दो। अब उसके दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे खड़े होकर एक-एक कर ताली बजाओ। बीच वाले से लगभग 10-12 कदम की दूरी बनाए रखना। अब पूछो कि आवाज़ किस दिशा से आई। पूछने के साथ ही एक कागज़ पर यह चार्ट बना दो।

ताली कहाँ बजाई	पट्टी बाँधे बच्चे को आवाज़ कहाँ से आती लगी

क्या आँखों पर पट्टी बाँधे वाला बच्चा सही दिशा बता पाया?

कहाँ छुआ?

दो टोलियों में बँट जाओ। पहली टोली के एक बच्चे का पैर किसी सफेद कागज़ पर रखकर तलुए का आकार उतार लो। फिर इसी बच्चे की आँखों पर पट्टी बाँध लो। चित्र में दिखाए तरीके से उसे बैठने को कहो।

अब दूसरी टोली से कोई एक बच्चा नुकीली, कड़क पत्ती की नोक से तलुए के अलग-अलग हिस्सों पर छुआएगा। ध्यान रहे कि पत्ती का दबाव एक बराबर हो। जिसके तलुए पर पत्ती छुआई जा रही है वह स्पर्श मालूम होने पर 'हाँ' कहेगा। तलुए के चित्र पर उसी जगह पर गोले का निशान लगा लो। जिस जगह पर स्पर्श न महसूस हो वहाँ अलग निशान लगा लो। अंत में चित्र को देखकर बताओ कि क्या सभी जगह पर स्पर्श बराबर से महसूस होता है।

छूकर बोलो

आँखों का काम है देखना। पर कहीं-कहीं यह देखना उँगलियाँ भी कर देती हैं। जैसे कितनी बार हम पत्तियों को केवल छूकर बता सकते हैं कि वह किस पेड़ की पत्ती है। इसके अलावा गीला, सूखा, नरम, कठोर, चिकना, खुरदुरा जैसे चीज़ों के और भी कितने गुण हैं जो छूकर बताए जा सकते हैं। इसी को खेल के रूप में भी खेला जा सकता है। खेल के नियम तुम सोचो।

मुख्य बात यह है कि कई सारे किस्म की पत्तियों के अलावा, पत्थर व अन्य चीज़ें भी लानी हैं। अब टोली वार छूकर या सूँघकर चीज़ों को बूझना है।

मोमबत्ती जलाओ

माचिस से मोमबत्ती जलाने में तो तुम्हें महारत हासिल होगी। लेकिन एक नई तरह से मोमबत्ती जलाना चाहोगे? इसके लिए भी तुम्हें माचिस और मोमबत्ती दोनों ही चाहिए होंगे। सामान इकट्ठा हो जाए तो किसी सुरक्षित स्थान पर जाकर मोमबत्ती जला लो। वैसे ही जैसे जलाते हो। कुछ देर तक इसे जलने दो।

करीब दो मिनट बाद एक दियासिलाई जलाकर उसे एक हाथ में पकड़ लो। मोमबत्ती को एक हल्की फूँक से बुझा दो। मोमबत्ती के बुझते ही उसमें से सफेद रंग का धुआँ निकलने लगेगा।

अब बिना समय गँवाए दियासिलाई को सफेद धुएँ से छुआ दो (बत्ती से नहीं)।
क्या हुआ?
जल गई ना मोमबत्ती दूर से ही?

यह प्रयोग किसी बड़े की ही मौजूदगी में करना। आग का मामला है ना!

तुम भी बनाओ

फिरकी

1. कागज़ की एक पट्टी लो, लगभग एक इंच चौड़ी और 7–8 इंच लम्बी। कॉपी का कागज़ चलेगा, पर अखबार का नहीं।

2. पट्टी के दो–तिहाई भाग को एक सिरे से दिये की लौ का आकार दे दो।

3. दूसरे सिरे को बार–बार मोड़कर दिये जैसा बना लो

4. दिये की लौ को बीच से दो भागों में काट दो – पूरी नहीं, बस आधे से थोड़ा ज़्यादा।

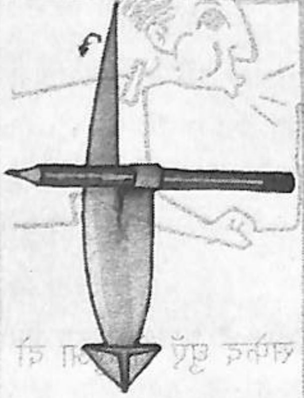

5. लौ के कटे हुए दोनों भागों को हल्के से पेंसिल या उँगली पर लपेटो। एक को आगे तो दूसरे को पीछे की तरफ।

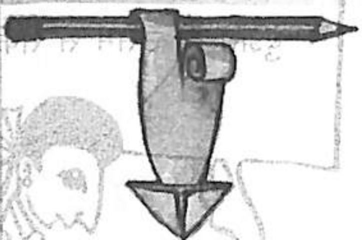

6. बस अब अपनी फिरकी को किसी ऊँची जगह से नीचे टपकाओ। देखो कैसे घूमती– इतराती नीचे उतरती है।

 सभी चित्र- विवेक वर्मा

इस खेल को बच्चे समूह में खेलते हैं। खेल को घर के अंदर और बाहर दोनों जगह खेला जा सकता है। एक बच्चे को दूसरे कमरे में भेज दिया जाता है, ताकि वह यह न देख सके कि बाकी बच्चों में से कोई एक कहाँ छिपा है। दाम देने वाले की आँख पर पट्टी बाँध दी जाती है। अब उसको ढूँढना है कि वह बच्चा या बच्ची कहाँ छिपी है। इस मुश्किल में दाम देने वाले को रास्ता दिखाते हैं, अन्य बच्चों द्वारा गाये गये गीत।

एक बड़े कमरे में 'आई दाई दालालाई' खेल खेला जा रहा है। दूसरे कमरे में ले जाकर राजा उर्फ दाम देने वाले की आँखों पर पट्टी बाँधी जा चुकी है। इधर, सब बच्चों ने अपने बीच से कोई एक मानलो एक लड़की जिसका नाम है श्रेया। उसको दरवाज़े के पीछे छिपा दिया है। राजा टटोलते-टटोलते आगे बढ़ रहा है। सब बच्चे झूम-झूमकर गा रहे हैं-

आई दाई दालालाई
अपना साथी ढूँढो भाई

राजा सीधे आगे बढ़ने लगता है, लेकिन श्रेया तो कमरे के बाईं तरफ वाले दरवाज़े के पीछे छिपी है। बच्चों का समूह यह देखकर धीमी और दुखभरी आवाज़ में गाने लगता है -

आई दाई दालालाई
कुछ न चल पाई चतुराई
भटके राह भूलकर राजा
सबके बीच में बने तमाशा
धेले भर की अकल न पाई
आई दाई दालालाई।

राजा ठिठक जाता है। बच्चों की झिड़की और उन्हें करुण स्वर में गाते देखकर वह समझ जाता है कि उसकी दिशा गलत है। वह दाईं ओर मुड़ जाता है। यह देखकर बच्चे और दुखी होकर धीमी आवाज़ में गाने लगते हैं-

आई दाई दालालाई
आगे कुआँ पीछे खाई
कुएँ का पानी लाल है
खाई में घड़ियाल है
कैसे पार करोगे भाई
आई दाई दालालाई।

राजा फिर ठिठक जाता है। 'इसका मतलब है कि दाईं तरफ भी लड़की नहीं छिपी है।' वह सोचने लगता है। अचानक वह बाईं तरफ मुड़ता है और टटोल-टटोलकर आगे बढ़ने लगता है। बच्चे उसे सही राह पर बढ़ते देखकर खुश हो जाते हैं और उत्साह से गाने लगते हैं-

आई दाई दालालाई
राजा खाये दूध मलाई

राजा दरवाज़े के पास पहुँच जाता है। बच्चे खुश होकर गाना जारी रखते हैं-

गाये चिरैया, बाजे ढोल
कछुआ नाचे गोलमगोल
भालू चूसे गोल मिठाई

तभी राजा दरवाज़ा टटोलते हुए श्रेया का हाथ पकड़ लेता है। अब तो बाल मंडली उछल पड़ती है। श्रेया राजा की आँख से पट्टी हटाती है। सारे बच्चे दोनों को घेर कर गाने लगते हैं-

आई दाई दालालाई
साथी ढूँढा गाये गीत
ऐसे हुई बच्चों की जीत
बच्चे करते छप्प छपाई
आई दाई दालालाई
सबने मिलकर धूम मचाई
करते गा मा गा मा गाई
आई दाई दालालाइ

अब श्रेया दाम देगी और छिपेगा साहिल...।

प्रस्तुति : नरेन्द्र मौर्य

शेर और नन्हीं लाल चिड़िया

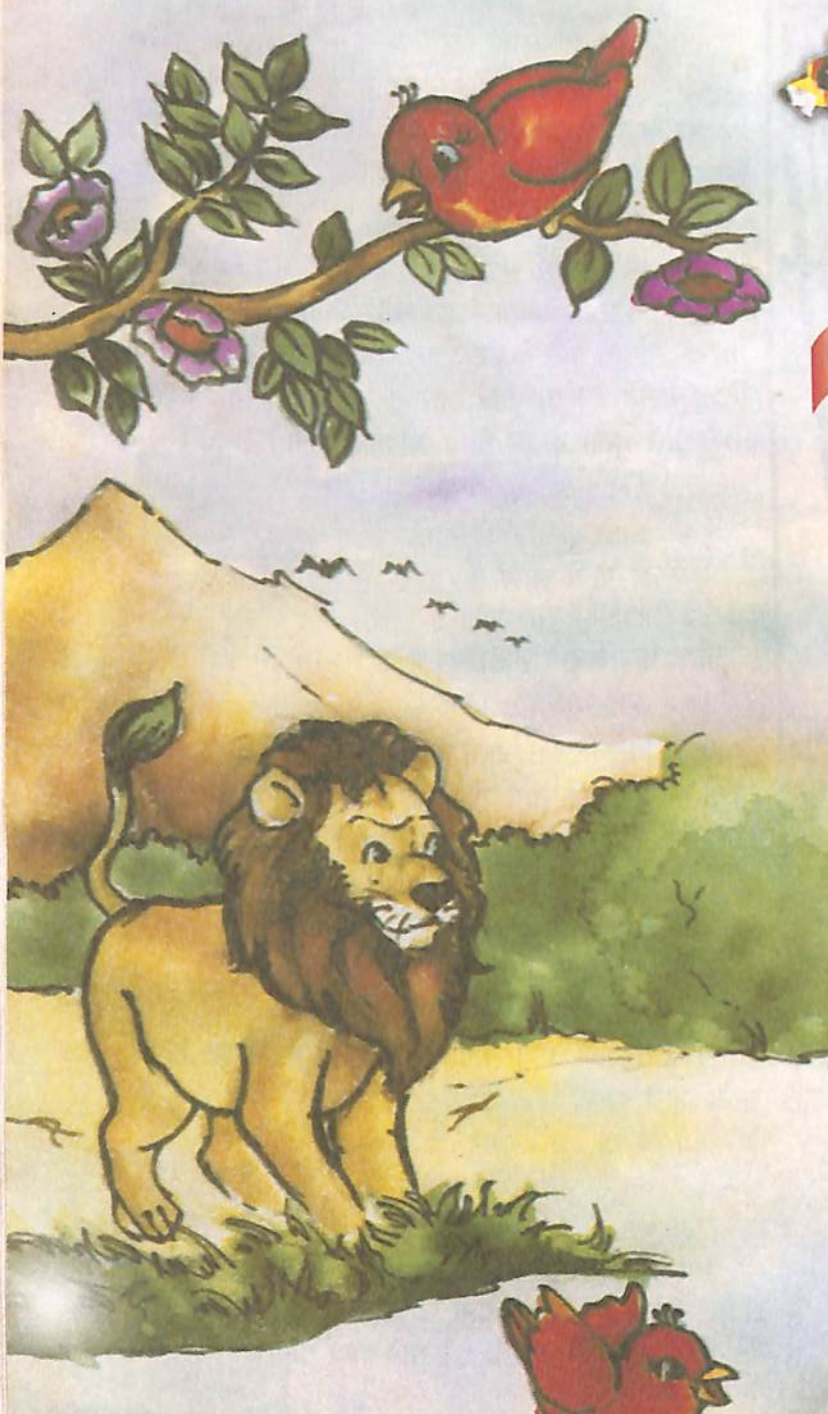

दोपहर का समय था। नन्हीं लाल चिड़िया चहचहाती हुई इधर-उधर फुदक रही थी। अचानक उसे एक शेर दिखा। उसने ऐसा शेर पहले कभी नहीं देखा था। शेर की पूँछ हरे रंग की थी - एकदम जंगल के पत्तों जैसी हरी। चिड़िया ने इतनी अनूठी चीज़ पहले कभी नहीं देखी थी। वो शेर की हरी पूँछ को देखकर बहुत खुश हुई।

"शेर, शेर," उसने पूछा, "तुम्हारी पूँछ इतनी हरी क्यों है?"

शेर उस नन्हीं चिड़िया की बोली समझ नहीं पाया। उसे लगा कि चिड़िया अपनी मस्ती में बस चहचहा रही है। शेर केवल मुस्कुराया। फिर वो नारंगी फूलों वाले खेत में चला गया। शेर ने कई नारंगी फूल तोड़े। फिर उसे एक नारंगी रंग की तितली दिखाई दी। शेर बहुत देर तक उस तितली को पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे दौड़ता रहा। नन्हीं चिड़िया को यह सब

देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। इतनी देर में शाम हो गई। पश्चिम में ढलते सूरज की नारंगी गेंद दिखाई देने लगी। कुछ देर शेर उस नारंगी गेंद की ओर चलता रहा। फिर अपनी गुफा में चला गया।

चिड़िया भी थक गई थी। वो पास के एक पेड़ पर बैठकर सुस्ताने लगी। वो शेर की पूँछ को दुबारा देखना चाहती थी। परंतु शेर अपनी गुफा से बाहर ही नहीं निकला। इसलिए चिड़िया ने पेड़ पर एक नरम घोंसला बनाया। रात को वो उसी में दुबककर सो गई।

सुबह को शेर गुफा में से अपनी पूँछ फटकारता हुआ बाहर निकला। उसकी पूँछ अब हरी नहीं, बल्कि एकदम नारंगी रंग की थी - फूलों जैसी नारंगी, तितलियों जैसी नारंगी, ढलते सूरज के नारंगीपन जैसी।

"शेर, शेर" चिड़िया चहचहाई, "तुम्हारी पूँछ नारंगी क्यों है?"

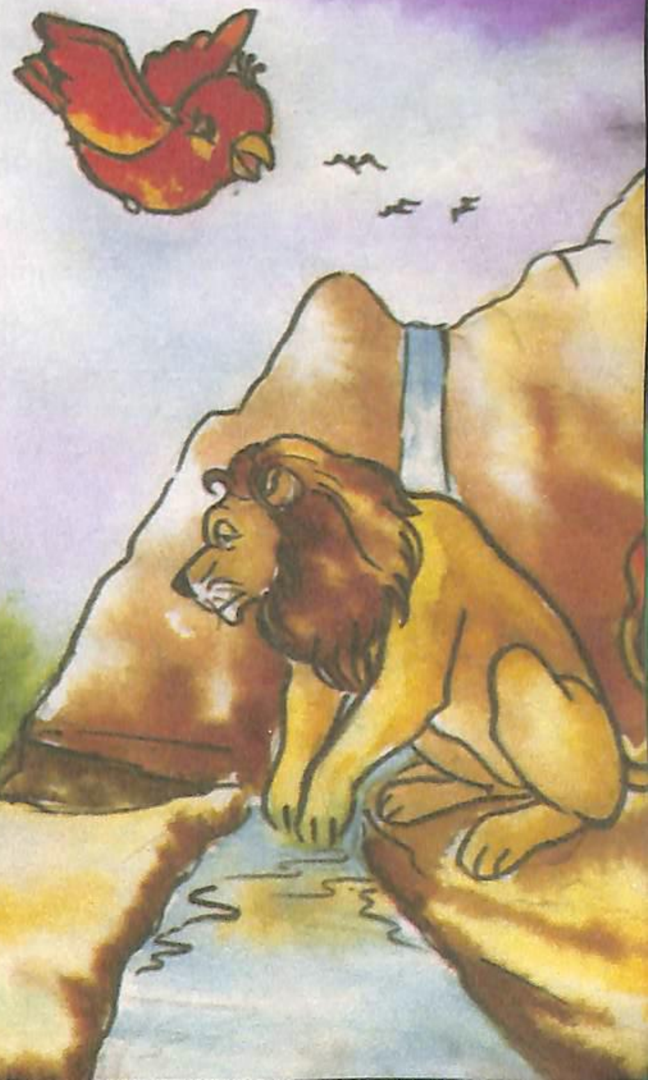

शेर चिड़िया की बात समझ न पाया। वो चिड़िया को देखकर सिर्फ मुस्कुराया और फिर पहाड़ी पर चढ़ गया। वहाँ से वो एक ऊँचे शिखर पर जा बैठा। शिखर पर नीले, चमकीले आसमान के नीचे एक नीली झील थी। शेर ने अपने पंजों की थकान मिटाने के लिए उन्हें झील के ठण्डे पानी में धोया। चिड़िया यह सब कुछ टकटकी लगाए देखती रही। दिन ढलते समय शेर शिखर से उतरकर, पहाड़ी से नीचे अपनी गुफा में आया। चिड़िया पास के पेड़ पर अपने घोंसले में आराम करने लगी। शेर की पूँछ नारंगी कैसे हुई? वो इस सवाल के बारे में अटकलें लगाने लगी।

सुबह के समय शेर की पूँछ का रंग फिर बदल गया था। शेर की पूँछ अब नारंगी नहीं थी। पूँछ का रंग अब

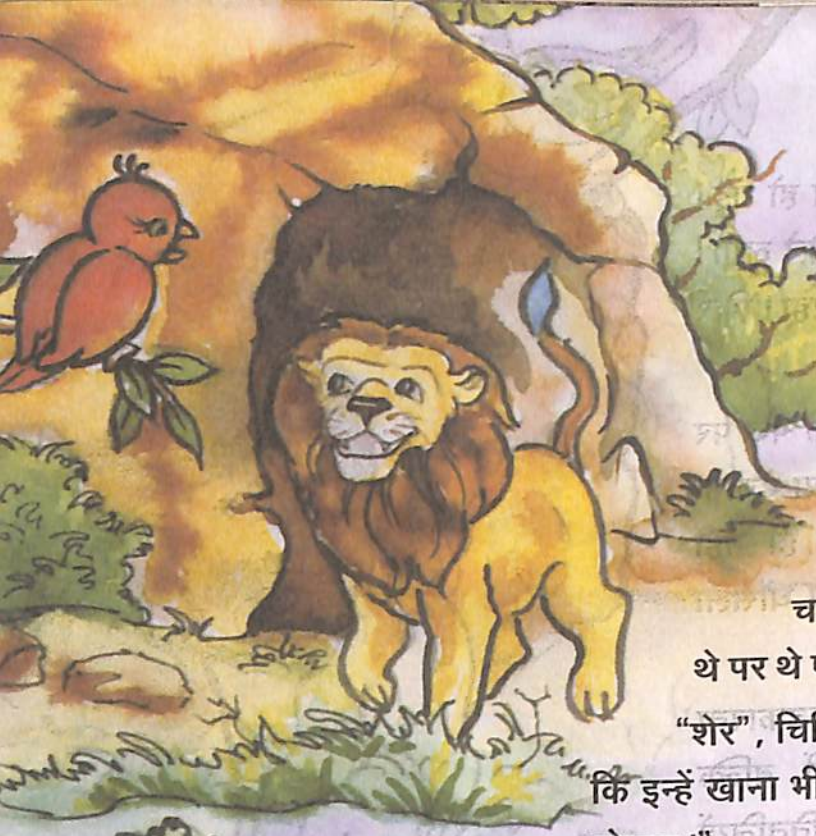

साफ आसमान जैसा नीला था। पूँछ अब पहाड़ी झील के निर्मल जल की तरह नीली थी। "शेर, शेर" चिड़िया चहचहाई, "तुमने अपनी पूँछ का रंग नारंगी से नीले कैसे बदला? क्या तुम कोई जादूगर हो?"

शेर केवल मुस्कुराया और फिर एक जंगली झाड़ी की ओर बढ़ा। झाड़ी में चमकीले, लाल-सुर्ख बेर लगे थे। बेर देखने में सुंदर थे पर थे एकदम खट्टे।

"शेर", चिड़िया मुँह बनाते हुए चहचहाई, "बेर इतने खट्टे हैं कि इन्हें खाना भी मुश्किल है! ये पक जाएँ उसके बाद ही तुम इन्हें तोड़ना।"

शेर चिड़िया की बोली समझ नहीं पाया। वो सिर्फ मुस्कुराया। वो चिड़िया की बात तो समझ नहीं पाया, पर उसे उस नन्हीं लाल चिड़िया का चहचहाना बहुत पसंद आया। पूरी दोपहर भर शेर बेर तोड़ता रहा। इस बीच चिड़िया पास के खेत में सूरजमुखी के बीज कुतरती रही। बीच में शेर के पँजे में बेर की झाड़ी का काँटा चुभ गया। चिड़िया ने बड़ी सावधानी से उस काँटे को अपनी चोंच से खींचकर निकाला। सूरज ढलते ही शेर अपनी पूँछ हिलाते हुए वापस गुफा में घुस गया। चिड़िया भी अपने घोंसले में आराम करने लगी। कल सुबह शेर की पूँछ किस रंग की होगी? चिड़िया इस प्रश्न पर अटकलें लगाने लगी। उसने शेर से कई सवाल पूछे थे। वो उनका उत्तर चाहती थी।

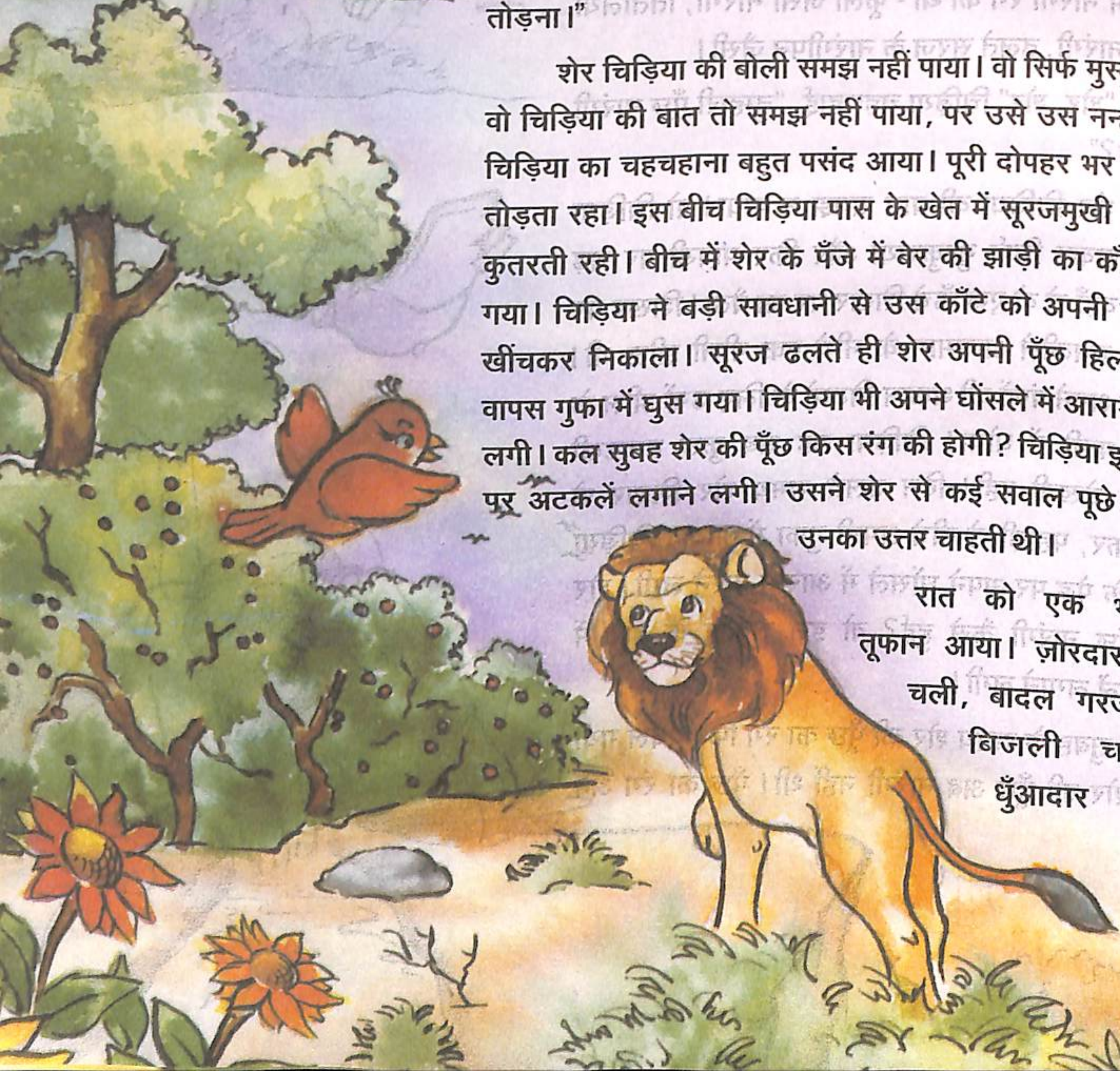

रात को एक भयानक तूफान आया। ज़ोरदार आँधी चली, बादल गरजे और बिजली चमकी। धुँआदार बारिश

चिड़िया के घोंसले को बहाकर ले गई। इतनी ज़ोरदार गर्जन को सुनकर शेर दौड़ता हुआ अपनी गुफा से बाहर आया। वो झट से पेड़ के ऊपर चढ़ा। वहाँ पर गीली, ठण्डी, सहमी हुई नन्हीं चिड़िया डर से काँप रही थी। शेर ने नन्हीं चिड़िया को सावधानी से अपने पँजों में उठाया। फिर वो चिड़िया को अपनी गुफा के अंदर ले गया। गुफा अंदर से गर्म और रंगीन थी। गुफा की सभी दीवारों पर सुंदर रंगीन चित्र बने थे - हरा जंगल, नारंगी फूल, नीला आसमान, नीली झील...।

"शेर, शेर!" चिड़िया खुशी से चहचहाई, "ये तस्वीरें यहाँ पर कैसे आईं? इन्हें किसने बनाया?"

शेर बस मुस्कुराया। उसने अपनी पूँछ को बेर के लाल रंग वाले भगोने में भिगोया। फिर अपनी पूँछ से बेर की झाड़ी पर चहचहाती लाल रंग की नन्हीं चिड़िया का चित्र बनाया। शेर चित्र बनाता रहा और चिड़िया चहचहाती रही। वो मुक्त कण्ठ से खुशी के और रंगों के गीत गाती रही। शेर ने इतना सुंदर नज़ारा पहले कभी नहीं देखा था। चिड़िया के गीतों को सुनकर शेर मंत्रमुग्ध हो गया।

सुबह तक तूफान थम गया। सूरज फिर से अपनी सुनहरी किरणें बिखेरने लगा। आज सुबह शेर की पूँछ का रंग लाल था। नन्हीं चिड़िया को शेर की पूँछ के लाल होने का रहस्य अब पता था। चिड़िया अपना गीत गाती रही। वो सोच रही थी, आज रात शेर किस रंग का चित्र बनाएगा?

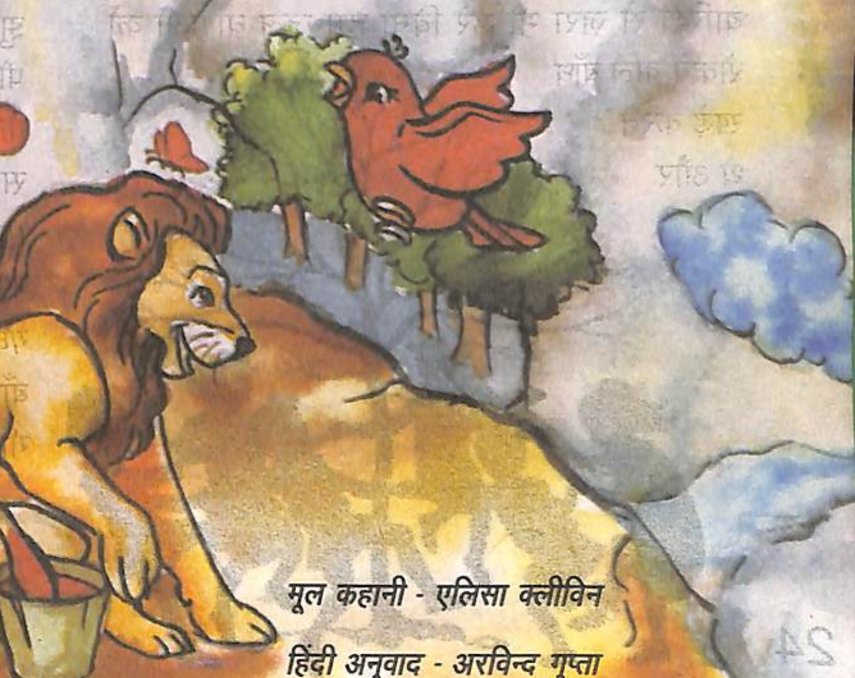

मूल कहानी - एलिसा क्लीविन

हिंदी अनुवाद - अरविन्द गुप्ता

सभी चित्र- विवेक वर्मा

हुआ यूँ कि...

मेरा दागिस्तान रसूल हमजातोव की किताब का नाम है। इसके दो भाग हैं। दागिस्तान रूस का एक स्वायत्त गणराज्य है। दागिस्तान का अर्थ है पर्वतों का देश। यहाँ के त्सादा गाँव के रहने वाले थे रसूल हमजातोव। वे अवार जाति के थे और अवार भाषा में कविताएँ लिखते थे। उन्होंने *मेरा दागिस्तान* लिखकर पूरी दुनिया में इस पहाड़ों और घाटियों वाले क्षेत्र को प्रसिद्ध कर दिया। रादुगा प्रकाशन, मास्को ने 1990 में इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाषित किया था। अनुवाद मदनलाल मधु ने किया है। यह किताब बड़ों के लिए है लेकिन इसमें बच्चों के मज़े की भी कई चीजें हैं। हम यहाँ इस किताब के कुछ रोचक अंश लेकर आये हैं। पढ़कर तुम्हें मज़ा आयेगा। दूर देश के दागिस्तान में भारत की ही तरह बहुत रोचक किस्से-कहानियाँ हैं, खेल हैं, गीत हैं और संघर्ष की गाथाएँ हैं। वहाँ कई जातियाँ और कई भाषाएँ हैं लेकिन आपस में कोई झगड़ा नहीं है।

वसंत में जब पहाड़ों पर बर्फ पिघलने लगती है तो मेरी अम्मा घाटी में तेज़ी से बहती आने वाली जल धाराओं को घण्टों तक देखती रह सकती थी। वह जाड़े में ही लकडी के पीपे तैयार करने लगती थी, ताकि गर्मियों में उन्हें परनालों के नीचे रखकर बारिश का पानी जमा कर सके।

मेरा सबसे प्यारा शौक तो बारिश के पानी से भरे डबरों में नंगे पाँव छपछप करते फिरना था। बारिश से ज़रा भी डरे बिना हम जल धाराओं को रोकने वाले बाँध खड़े करते थे और इस तरह छोटे-छोटे ताल बनाते थे। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि परिंदे जब पथरीले प्यालों से बारिश का पानी पीते हैं तो उन्हें कैसा आनंद प्राप्त होता होगा।

दोपहर की गर्मी हमारे यहाँ बड़ी भयानक और सब कुछ सुखा देने वाली होती है। गर्मी से धरती फट जाती है। चट्टानों से धधकती हुई भट्ठी की तरह गर्म हवा के झोंके आते हैं। वृक्षों की शाखाएँ झुक जाती हैं, खेत सूख जाते हैं, सभी कुछ-पेड़-पौधे, पक्षी, भेड़ें और निश्चय ही लोग भी आसमान के पानी यानी बारिश के लिए तरसते हैं। उस समय गाँव के किसी छोकरे को पकड़कर धूप में मुरझायी तरह-तरह की घासों की पोशाक पहनाकर रेड इंडियन-सा बना देते हैं। इसे *नन्हा बारिशी गधा* कहा जाता है। दूसरे बच्चे उसे रस्सी से बाँधकर गाँव में घुमाते हैं और यह भजन या प्रार्थना गीत गाते हैं -

अल्ला, अल्ला, जल्दी से बारिश भेजो
आसमान से धरती तक पानी भर दो
परनालों में बारिश, जल का शोर मचे

पानी बरसाओ, हर कोई यही कहे
बादल और घटाओ, नभ में छा जाओ
पानी की नदियाँ बन धरती पर आओ
प्यारी, प्यारी, सारी धरती धुल जाये
खेतों में फिर से हरियाली छा जाये

गाँव के बड़े लोग बाहर गली में आ जाते हैं। नन्हे बारिशी गधे पर घड़े या चिलमची से पानी डालते हैं और बच्चों के इस गीत को दोहराते हुए 'अमीन! अमीन!' कहते हैं। एक बार मैं भी बारिशी गधा बना था। मुझ पर इतना पानी उड़ेला गया जो सचमुच आधी बारिश के लिए काफी होता। किंतु अल्ला या आसमान हमारे ऐसे गानों को बहुत कम ही सुनते थे। सूरज आग बरसाता रहता था।

मुझे अम्मा का थका हुआ चेहरा याद आता है, जब वह पानी से भरा घड़ा पीठ पर लादे और गागर हाथ में लिए लौटती थी। पानी हमारे गाँव से तीन किलोमीटर दूर था। मुझे अम्मा का खुशी से खिला हुआ चेहरा याद आता है, जब बारिश होती थी, धरती भीग जाती थी और परनालों के नीचे रखे पीपों से पानी गिरता था। वे पानी से भर जाते थे और उनके किनारों से पानी छलककर नीचे गिरने लगता था।

मुझे याद आती है अपने गाँव की बूढ़ी, झुकी पीठवाली हबीबात की। वह हर सुबह कंधे पर फावड़ा रखकर गाँव की सीमा से परे जाती और जहाँ-तहाँ जमीन खोदने लगती। उसके दिमाग में पानी ढूँढ़ने की सनक थी और वह लगातार उसे खोजती रहती थी। सभी यह जानते थे कि वह व्यर्थ ही कोशिश करती है, लेकिन कोई भी उससे कभी कुछ नहीं कहता था। सिर्फ मैंने, नादान छोकरे ने ही एक बार उससे कहा- 'यहाँ पानी नहीं है।'

इस बात को लेकर मेरे पिताजी मुझ पर बहुत बिगड़े थे। मैंने कहा-'लेकिन वहाँ तो पानी है ही नहीं।' पिताजी बोले-'ऐसा भी होता है कि लोगों के पास रोटी नहीं होती। लेकिन क्या उन पर हँसा जाए? मेरे बेटे, इस बात को याद कर लो कि गरीबी और उन लोगों की कभी खिल्ली नहीं उड़ानी चाहिए जो पानी खोजते हैं।'

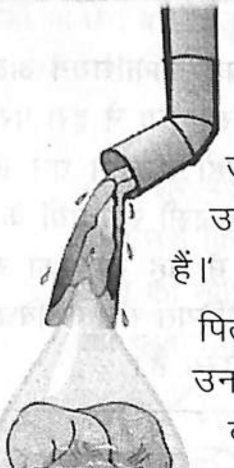

पिताजी हमेशा कहा करते थे कि उनके जीवन में सबसे अधिक खुशी का दिन वह था, जब दूरस्थ पर्वत से पाइपों में बहता पानी उनके गाँव में आया। इसके पहले पिताजी हर दिन कुदाल लेकर अन्य लोगों के साथ पानी का नल बनाने का काम करते रहते थे। हमारे गाँव में पानी का आने का वह दिन मुझे अच्छी तरह याद है। जब पानी बहने लगा तो पिताजी ने उसमें फूल तक डालने से मना कर दिया था।

प्रस्तुति : नरेन्द्र मौर्य

ऐसा है यह दागिस्तान

दागिस्तान की राजधानी मखाचकला

दागिस्तान पहाड़ों और घाटियों वाला इलाका है। इसके एक तरफ कैस्पियन सागर है और दूसरी तरफ कॉकेसस पर्वत। चार कोइसू नदियाँ दागिस्तान के आसपास बहती हैं और सुलाक और सामूर नगर उनका स्वागत करते हैं। मखाचकला यहाँ की राजधानी है और डर्बेंट प्रमुख नगर।

दागिस्तान की आबादी दो लाख चौहत्तर हजार है। यहाँ प्राकृतिक संसाधन बहुत है मगर उनका बेहतर उपयोग नहीं हो पाया है। रसूल हमजातोव कहते हैं- 'हमारी धरती में कोमलता की कमी है। पहाड़ों पर पेड़ भी अकसर नजर नहीं आते। हमारे पहाड़ मुरीदों के मुंडे सिरों, हाथियों के सपाट, चिकने कंधों जैसे हैं।' दागिस्तान के तटीय प्रदेशों में तेल और गैस प्रचुर मात्रा में है। यहाँ की मुख्य फसल गेहूँ, मक्का, सूरजमुखी, फल और अंगूर आदि हैं। यहाँ फलों से शराब बनायी जाती है। इसके अलावा, यहाँ रासायनिक, वस्त्र और लकड़ियों से संबंद्ध उद्योग हैं। दागिस्तान के करीब तीस समुदायों ने मिलकर पनबिजली का उत्पादन किया है।

दागिस्तान का वीर योद्धा इमाम शामील अपने साथियों के साथ - एक कलाकृति

ईसा से पहली शताब्दी में यह कॉकेसियन अलबेनिया का हिस्सा था। बाद में पारसी हूण समुदाय ने इस पर कब्जा कर लिया। सातवीं सदी में अरब यहाँ इस्लाम धर्म लेकर आये। 15वीं सदी तक यह टर्की और पारसी समुदायों के बीच संघर्ष का केंद्रबिंदु बना रहा। 1921 में यह रूस का स्वायत्तशासी गणराज्य बन गया। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद से यह रशियन फेडरेशन का सदस्य है।

दागिस्तान के लोगों ने तीस वर्षों तक रूस की ज़ारशाही के खिलाफ संघर्ष किया है। उनके नेता इमाम शामील की बहादुरी के बारे में कई दंतकथाएँ हैं। शामील ने पूरे दागिस्तान को एकजुट किया और वर्षों तक जार के सैनिकों से लड़ता रहा।

उड़ता जाए उल्लू

तुम्हें चाहिए होगा : मोटा गत्ता, पेंसिल, कैंची, क्रेयॉन, मोटा धागा, पिन (चित्र देखो)

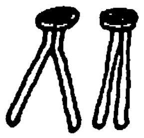

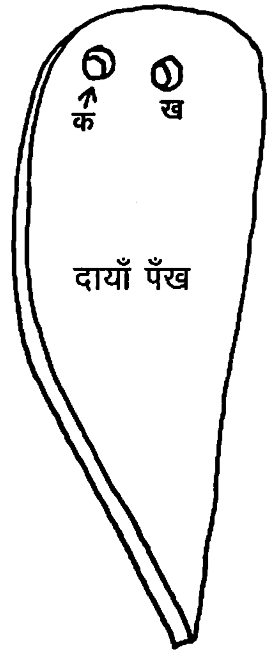

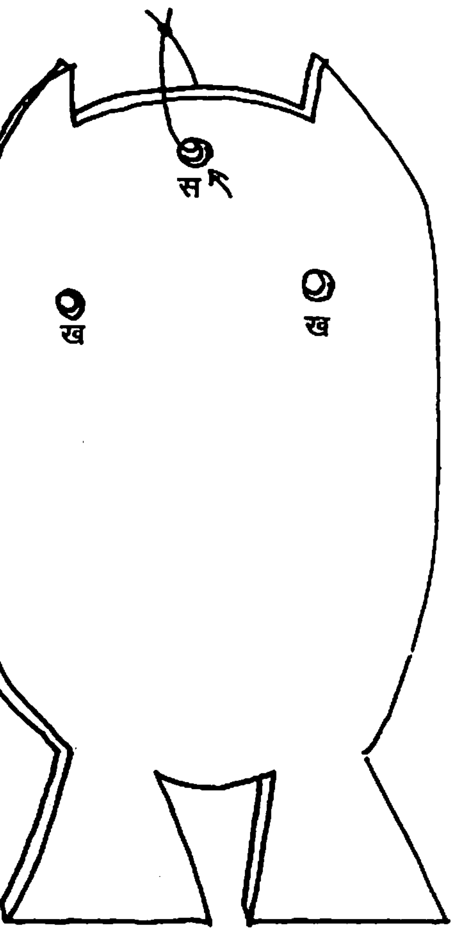

1. उल्लू का शरीर और पँख बनाने के लिए गत्ते पर निशान लगा कर काट लो। पँख और शरीर के चित्र में जहाँ भी छेद बने हैं तुम भी ठीक वहीं पर छेद कर लो। क्रेयॉन से उल्लू के पँख और शरीर को सजा लो।

2. एक धागा लो और चित्र में दिखाए तरीके से उसका एक सिरा दाएँ पँख के **क** छेद से और दूसरा सिरा बाएँ पँख के **क** छेद से बाँध लो।

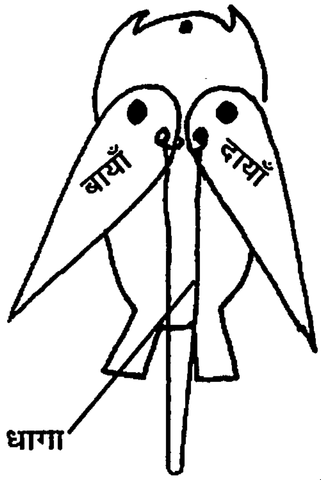

4. शरीर पर बने **स** छेद में एक धागा पिरो लो। उसे किसी कील या खूँटे पर टाँग लो। धागे को खींच कर देखो। कैसी लगी उल्लू की फड़फड़ाहट।

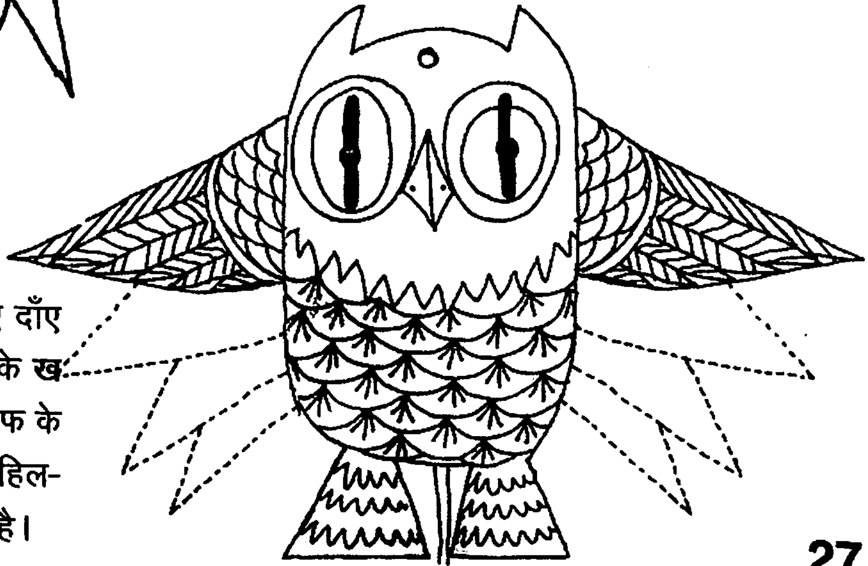

3. पँखों को उल्लू के शरीर से जोड़ने के लिए दाँए पँख के **ख** छेद में और शरीर की दाएँ तरफ के **ख** छेद में एक पिन को पिरो लो। ऐसा ही बाएँ तरफ के पँख के साथ भी करना है। पँख अच्छी तरह से हिल-डुल सकें इसके लिए पिन को ढीला लगाना है।

माथा पच्ची

1

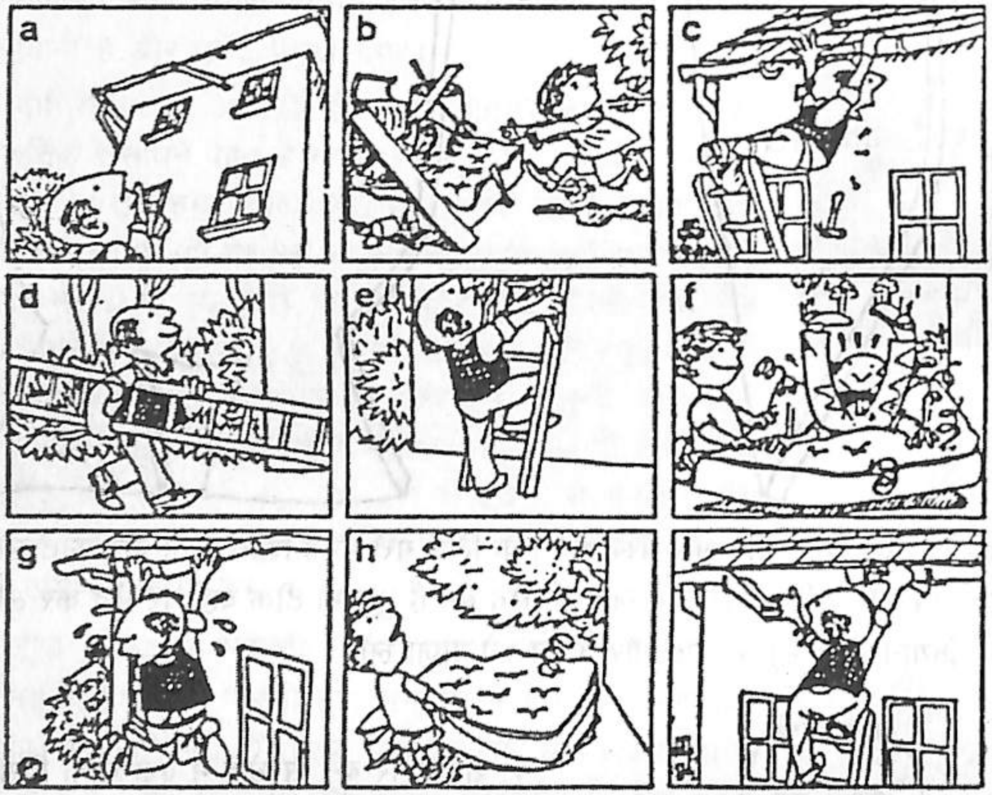

ये जो महाशय तुम्हें इस तस्वीर में दिख रहे हैं, उन्हें एक बात सूझी। बस वे उसे पूरा करने में जुट गए।

इन सब तस्वीरों में उसी घटना के चित्र हैं। हाँ पर उनका क्रम गड़बड़ा गया है। क्या तुम उन्हें सही क्रम में जमा सकते हो?

2

इस बोतल पर कागज़ की एक पट्टी रखी है। और इस पट्टी पर दो सिक्के रखे हैं। तुम्हें इस कागज़ की पट्टी को निकालना है। पर एक तो तुम सिक्कों और गिलास को हाथ नहीं लगा सकते। दूसरे सिक्के बोतल के मुँह से नहीं गिरे। आजमाकर देखो।

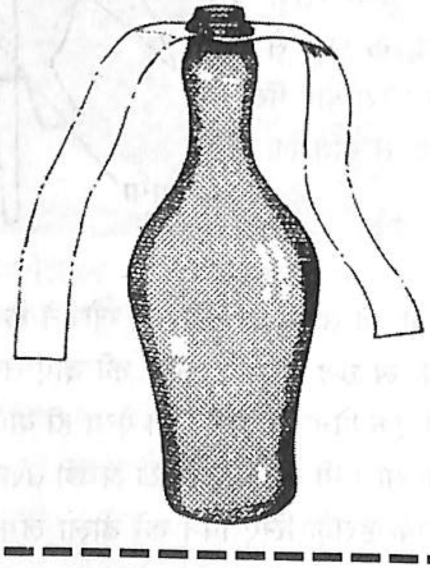

3

इन दो चित्रों में कम से कम सात अंतर ढूँढो।

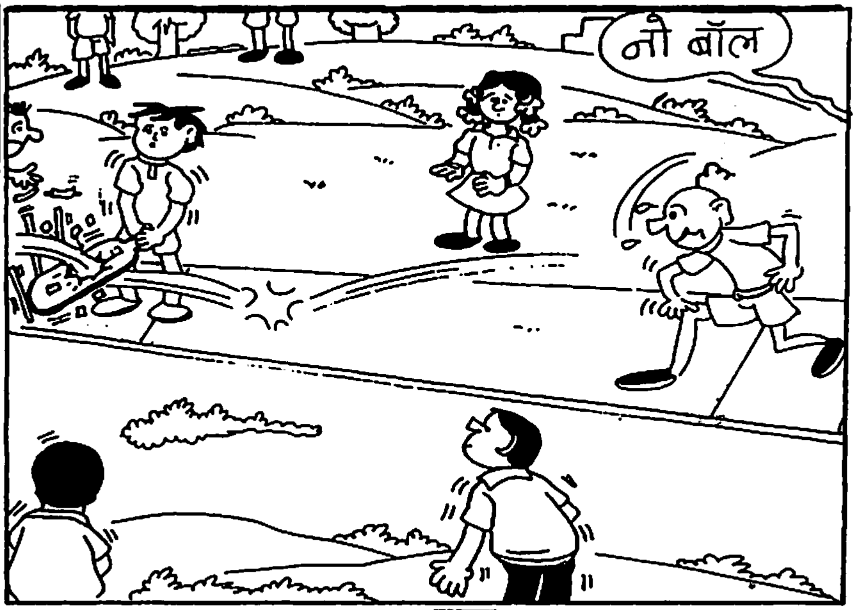

© DEVANSHU VATSA

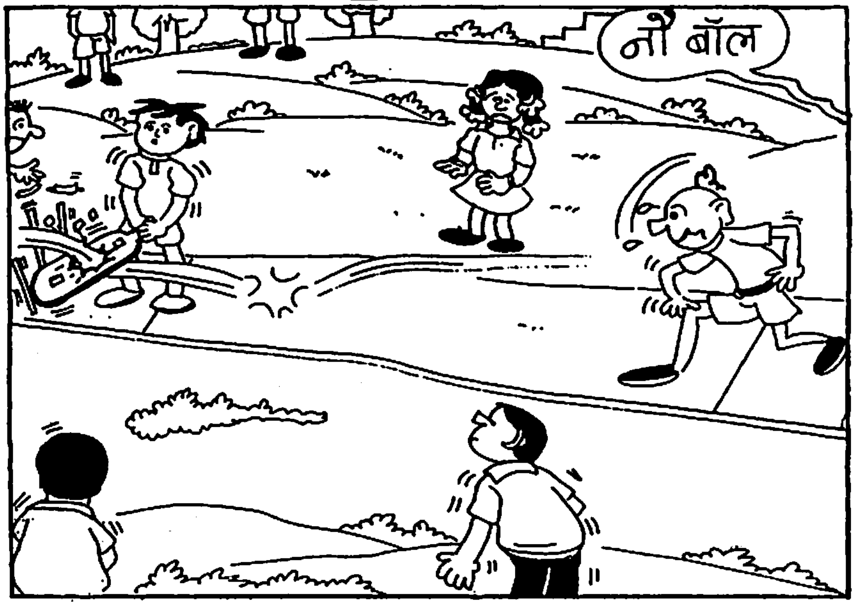

4

कोई भी तीन अंकों की संख्या लो। इसे दस से गुणा करो। अब इस नई संख्या में से पहले चुनी तीन अंकों की संख्या घटाओ। अब इसे 9 से भाग दो। क्या बचा?

5

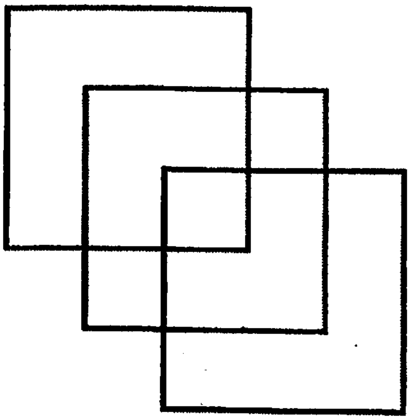

क्या तुम इस आकृति को बिना हाथ उठाए और बिना एक ही रेखा पर दुबारा कलम ले जाए बना सकते हो?

दुनिया का दूसरा बड़ा पेड़ खतरे में

ढाई हज़ार साल से भी ज्यादा पुराना पेड़ इन दिनों खतरे में है। यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा पेड़ है। यह हैं सान फ्रॉसिस्को का वाशिंगटन ट्री। इस विशाल पेड़ की लम्बाई करीब 115 मीटर और इसका घेरा करीब 45.9 मीटर है। वाशिंगटन ट्री उत्तरी केलिफोर्निया के सिक्योआ नेशनल पार्क का मुख्य आकर्षण है। वैज्ञानिक, इस पेड़ की उम्र 2500 से 3200 साल के बीच मानते हैं। वर्ष 2003 में जंगल में आग लगने के कारण इसे नुकसान पहुँचा और इस साल जाड़े व बर्फबारी और बारिश से इस पेड़ को बहुत नुकसान पहुँचा। इन आपदाओं के कारण धीरे-धीरे इसकी लम्बाई घटकर बस 52 मीटर रह गई है। पेड़ पर बस अब थोड़े ही पत्ते बचे हैं। वैज्ञानिक उसकी हालत का पूरा आकलन नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि यह निकटतम सड़क से करीब एक किलोमीटर दूर है। और वहाँ जमीन पर बर्फ जमी है।

रावेन्द्र रवि सम्मानित

हिन्दी के बाल साहित्यकार रावेन्द्र कुमार रवि को सृजनात्मक लेखन के लिए स्वर्ण पदक मिला। उन्हें यह स्वर्णपदक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्तविश्वविद्यालय (इग्नु) नई दिल्ली के सोलहवें दीक्षांत समारोह के मौके पर राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने प्रदान किया। श्री रावेन्द्र ऊधमसिंहनगर के चारुबेटा के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में गणित एवं विज्ञान के शिक्षक हैं। एक बाल साहित्यकार के नाते वे चकमक से भी जुड़े हुए हैं। उनकी रचनाएँ चकमक में लगातार प्रकाशित होती रही हैं।

हर ज़िले में पुस्तक मेला

यदि तुम मध्यप्रदेश के किसी स्कूल में पढ़ते हो तो तुम्हारे लिए यह अच्छी खबर है। मध्यप्रदेश सरकार के राज्य शिक्षा केन्द्र ने स्कूलों में पढ़ने और सीखने की सामग्री उपलब्ध कराने के लिए एक अच्छी पहल की है। राज्य शिक्षा केन्द्र ने प्रदेश के हर ज़िले में पुस्तक मेलों का आयोजन किया। इन पुस्तक मेलों में प्रायमरी, मिडिल स्कूलों के बच्चों और शिक्षकों के लिए पुस्तकें तथा अन्य सामग्री उपलब्ध कराई गईं। शिक्षकों को सामग्री खरीदने के लिए पैसे भी सरकार ने दिए। पुस्तक मेलों में देश के कई प्रकाशकों को स्टॉल लगाने का मौका दिया गया। इस नए सत्र में तुम्हें कोर्स की किताबों के अलावा नई-नई किताबें पढ़ने के लिए मिलेंगीं। चकमक की ओर से भी हम ढेर सारी सामग्री लेकर बत्तीस ज़िलों के पुस्तक मेलों में पहुँचे। चकमक की सामग्री भी तुम्हें अपने स्कूलों में देखने को मिलेगी। हमें लिखकर भेजना कि तुम्हारे स्कूलों में कौन कौन सी किताबें और सामग्री आई हैं। और हाँ यह भी बताना कि तुम्हें कौन-सी सामग्री अच्छी लगी। **रपट : शिवनारायण गौर**

बच्चों ने बनाई फिल्में

प्रदीप कुमार

बच्चे सिर्फ खेलते-कूदते या पढ़ते-लिखते ही नहीं हैं, उन्हें अगर मौका मिले तो वे फिल्म बनाने जैसा गंभीर काम भी कर सकते हैं। गैर-सरकारी संगठन प्लान इंडिया की पहल से बच्चों ने भी फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा है। बच्चों ने सात से सोलह मिनट की अवधि वाली करीब चालीस फिल्में बनायी हैं। ये बच्चे साधारण परिवारों के हैं। इन बच्चों ने बाल विवाह, दहेज, एड्स, अंधविश्वास, घरेलू हिंसा, बाल यौन उत्पीड़न और बाल मजदूरी जैसे विषयों पर फिल्में बनायी हैं। इन बच्चों की दस फिल्मों को वन वर्ल्ड ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट ने बेहतर प्रस्तुति के लिए स्पेशल अचीवमेंट अवार्ड दिया।

दिल्ली की 15 वर्षीय सरोज के निर्देशन में बनायी गयी 'एडिक्टेड इनोसेंस' फिल्म काफी चर्चा में रही। यह फिल्म बच्चों में गुटखा, सिगरेट और शराब की बढ़ती लत पर केंद्रित है। फिल्म का निर्देशन करके सरोज बहुत उत्साहित है।

दिल्ली के ही छात्र सुमित ने एड्स पर एनिमेटेड फिल्म 'ए मिसगाइडेड लाइफ' का निर्माण किया है। सुमित ने बताया कि फिल्म बनाने से पहले उसे बहुत डर लग रहा था लेकिन अब वीडियो कैमरे से काम करने में कोई मुश्किल नहीं है।

कर्नाटक के वीरेश के निर्देशन में 'अवेयरनेस ऑफ लाइफ' फिल्म बनायी गयी है। वीरेश का कहना है कि जब तक लोग एड्स पर बातचीत करने से हिचकेंगे, तब तक इस समस्या को खत्म नहीं किया जा सकता।

राजस्थान के एक सरकारी स्कूल की छात्रा पुष्पा ने बाल विवाह को अपनी फिल्म का विषय बनाया है। पुष्पा की शादी चार साल पहले हो चुकी हैं लेकिन उसे अपने पति का नाम नहीं मालूम। गढ़वाल के जसपाल सिंह चौहान ने 'ब्राडेंड एक्जीस्टेंस' फिल्म के माध्यम से गढ़वाली लड़कियों की दुर्दशा बयान की है।

प्लान इंडिया के 'कुछ कहना है' कार्यक्रम के तहत इस योजना की शुरुआत की गयी। इस काम में बच्चों के क्षेत्र में काम रहे गैर-सरकारी संगठनों से भी मदद ली गयी। बच्चों को पहले कैमरा हैंडलिंग और प्रकाश संयोजन का प्रशिक्षण दिया गया। देश में विभिन्न स्थानों पर बीस कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं। बीस दिनों की कार्यशाला के बाद बच्चे फिल्म निर्माण में दक्ष हो गये। ये फिल्में पिछले साल दिल्ली के बाल फिल्म महोत्सव मे दिखाई गयी थीं।

अवेयरनेस ऑफ लाइफ की शूटिंग करते हुए कर्नाटक के बच्चे

खबरें इधर-उधर की

सबसे लंबी रेल सुरंग

विश्व की सबसे लंबी रेल सुरंग जापान में बनकर तैयार हो गयी है। इसकी लंबाई 26.5 किलोमीटर

है। टोक्यो से करीब 550 किमी दूर हकोदा पहाड़ियों में यह सुरंग बनायी गयी है। इस सुरंग से दुनिया में सबसे तेज रफ्तार से चलने वाली बुलेट ट्रेन 2010 से चलने लगेगी।

मज़े की बात यह है कि जापान के पास सबसे लंबी रेल सुरंग होने का खिताब थोड़े समय ही रहेगा। जल्दी ही स्विट्जरलैंड और स्पेन में इससे भी लंबी सुरंगें बनकर तैयार हो जाएँगी। स्विट्जरलैंड की 34.6 किमी लंबी लोट्सबर्ग सुरंग और स्पेन की 28.4 किमी लंबी गुआदारामा सुरंग का काम जल्दी ही खत्म होने वाला है।

अंडे डायनासोर के

चीन में एक गाँव ऐसा है जहाँ डायनासोर के अंडों के जीवाश्म बहुत मिलते हैं। 1996 के किसी दिन की बात है। बच्चे खेल रहे थे और खेलते-खेलते ही अंडों के जीवाश्म उनके हाथ लग गये। बाद में पता चला कि ये अंडे डायनासोर के हैं। इसके बाद तो गाँव में ऐसे हज़ारों अंडे मिले। जहाँ पहली बार अंडे का जीवाश्म मिला था, उस जगह डायनासोर जीवाश्म संग्रहालय बना दिया गया।

अब इसी संग्रहालय को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में जगह मिली है और इसका कारण है कि यहाँ डायनासोर के अंडों के सबसे अधिक जीवाश्म सुरक्षित हैं। जानते हो कितने अंडे? दस हज़ार आठ। इसलिए इसे सर्वश्रेष्ठ जीवाश्म संग्रहालय का दर्जा दिया गया है।

चीन के इस गाँव का नाम ह्यूआन है और यह गुआंगडोंग प्रांत में है। अंडों के जीवाश्म खोजने में स्थानीय लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

14वीं बार परीक्षा

उत्तरप्रदेश में फतेहपुर जिले का एक गाँव डीप। साठ साल के जब्बार दादा यहीं रहते हैं। इस साल उन्होंने चौदहवीं बार हाई स्कूल की परीक्षा दी है। यह परीक्षा उन्होंने सर्वोदय इंटर कालेज में दी है। उम्र ने उनकी आँखें और हाथ-पाँव जरूर कमजोर कर दिए हैं लेकिन उनके हौसले बुलंद हैं। पहली बार उन्होंने 1968 में हाई स्कूल की परीक्षा दी थी। उसके बाद से अब तक वे चौदह बार परीक्षा दे चुके हैं। लेकिन पास नहीं हो पाए।

मुर्गी का अंडा

मुर्गी के अंडे का वजन भला कितना हो सकता है? चीन में पोल्टी फार्म चलाने वाली एक महिला की साधारण मुर्गी ने 206 ग्राम का अंडा दिया है। यह अब तक का सबसे बड़ा मुर्गी का अंडा है। इसके पहले गिनीज बुक में 148 ग्राम वजन के अंडे को सबसे बड़ा माना गया था। चीन में हेनान प्रांत के जिआओजुओ में पोल्टी फार्म की आठ महीने की मुर्गी ने यह अंडा दिया है। इसकी लंबाई 8.5 सेंटीमीटर है और इसका अधिकतम व्यास 6.1 सेंटीमीटर है।

है न कमाल की मुर्गी!

अरी गिलहरी

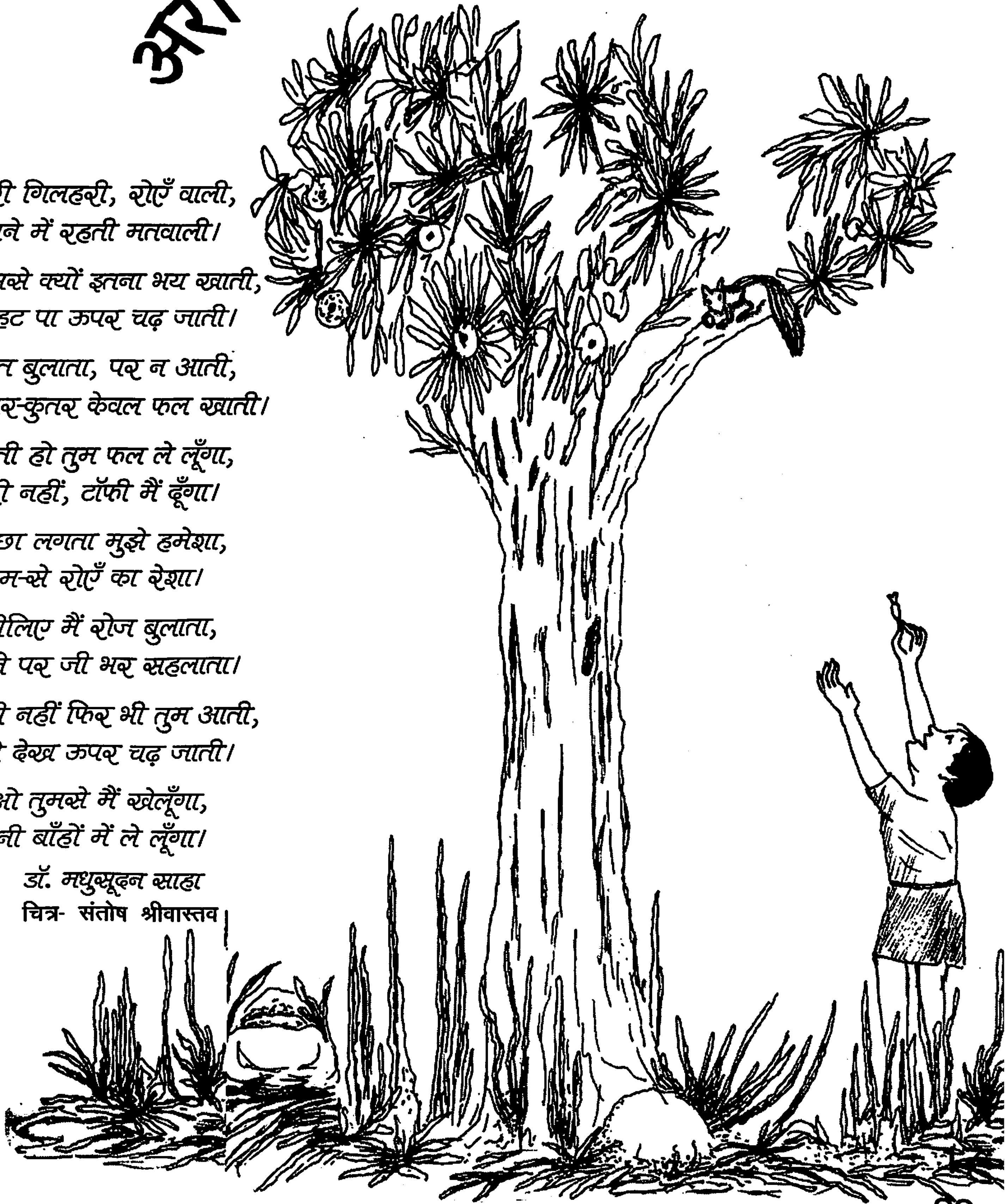

अरी गिलहरी, रोएँ वाली,
अपने में रहती मतवाली।

मुझसे क्यों इतना भय खाती,
आहट पा ऊपर चढ़ जाती।

बहुत बुलाता, पर न आती,
कुतर-कुतर केवल फल खाती।

डरती हो तुम फल ले लूँगा,
अरी नहीं, टॉफी मैं दूँगा।

अच्छा लगता मुझे हमेशा,
रेशम-से रोएँ का रेशा।

इसीलिए मैं रोज बुलाता,
आने पर जी भर सहलाता।

कभी नहीं फिर भी तुम आती,
मुझे देख ऊपर चढ़ जाती।

आओ तुमसे मैं खेलूँगा,
अपनी बाँहों में ले लूँगा।

डॉ. मधुसूदन साहा
चित्र- संतोष श्रीवास्तव

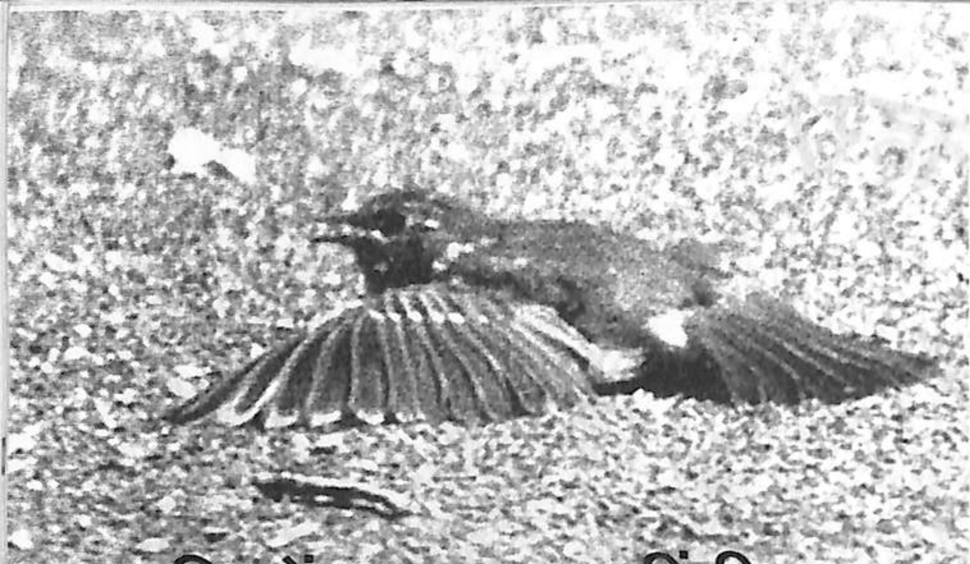

पक्षियों का धूल-चींटी स्नान

बात सन् 1934 की है। जगह है ऑस्ट्रेलिया का मेलबोर्न शहर। यहाँ के एक स्कूली छात्र पीटर ब्रेडली ने एक दिन एक चिड़िया को अपने पँखों में चींटियाँ घुसाते हुए देखा। उसने यह भी गौर किया कि कई चिड़ियाँ धूल में भी नहाती हैं। पीटर ने अपने इन अनुभवों को मशहूर पक्षी विशेषज्ञ चिशोलम को भेज दिया। यह खत पढ़कर चिशोलम बहुत खुश हुए। उन्होंने इसमें बड़ी दिलचस्पी ली। और स्वयं इस घटना को देखने का प्रयास किया। चिशोलम ने पीटर का वह खत एक अखबार में छापा। वे पीटर के घर भी गए। उन्हें भी यह सवाल तंग करने लगा था कि चिड़ियाँ ऐसा क्यों करती है? चिशोलम के पास अन्य देशों से भी इस घटना से संबंधित खत आने लगे। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया में पक्षियों की इस आदत की ओर कई लोगों का ध्यान गया।लोग अपने अवलोकन भेजने लगे। स्वीडन के व्यक्ति ने देखा कि ये पक्षी उन चींटियों को खाते नहीं हैं जिनको ये परों में रखते हैं। एक मशहूर पत्रिका *नेशनल ज्यॉग्राफिक* में एक चित्र छपा। इसमें पक्षी चींटियों के घरौंदों में लोट लगा रहे हैं।

1959 में चिशोलम ने एक पत्रिका में इस संबंध में एक लेख लिखा। इसमें उन्होंने बताया कि पक्षी अपनी चमड़ी में पल रहे परजीवियों से बचने के लिए परों में चींटियाँ रखते हैं। दरअसल चीटियाँ एक अम्ल का स्राव करती हैं। यह अम्ल परजीवियों की रोकथाम में मदद करता है। पक्षियों के धूल में लोटने के बारे में उनका कहना था कि महीन धूल भी परजीवियों से बचाने में सहायक होती है। धूल के महीन कण परजीवियों के श्वसन अंगों को बंद कर देते हैं। कई लोगों ने यह भी कयास लगाए कि शायद पक्षी अपने परों में चीटियाँ इसलिए रखते हैं क्योंकि चींटियों से अम्ल की खुशबू आती है। इस बात को परखने के लिए एक प्रयोग किया गया। इस प्रयोग में चींटियों को या बहुत कम तापमान पर रखा गया या फिर गरम करके सुखा लिया गया। फिर उनके ढेर पर कुछ पक्षियों को लोट लगाने को प्रेरित किया गया। पर इन मरी हुई चींटियों पर लोट लगाने में पक्षियों ने कोई दिलचस्पी नहीं ली। पक्षियों की इसी आदत पर कुछ और प्रयोग भी किए गए।

मैंने थोड़ी सी मिट्टी उठाई और उसे ज़मीन पर फैला दिया। मिट्टी में हज़ारों चींटियाँ चल-फिर रही थीं। चिड़ियाँ आईं चींटियों को अपनी चोंच पर रखा। पँख फैलाए और आगे की तरफ झुका लिए। पूँछ को भी आगे की ओर कर लिया। फिर चींटियों को पँखों के नीचे रगड़ने लगीं। कुछ चींटियाँ चोंच से कुचली थीं कुछ नहीं। कोई भी चिड़िया पँखों के ऊपर या टाँगों पर चींटियाँ रगड़ते नहीं दिखी।

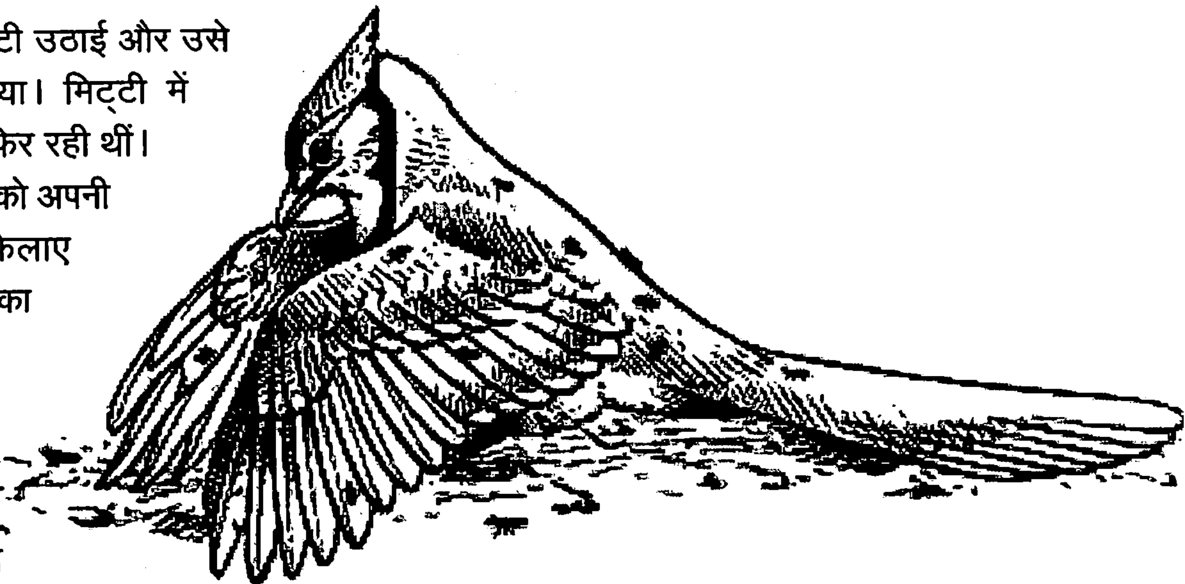

एक अन्य बार चिड़ियाँ अपनी छाती, पेट आदि पर चींटियाँ रगड़ते दिखीं। ध्यान से देखने पर पता चला कि हालाँकि उनकी चोंच इन अंगों की दिशा में तथा इनके बहुत पास थी लेकिन पँखों को छू नहीं रही थी। कुछ चिड़ियाँ तो रगड़ने के बाद चींटियों को खाते भी देखी गईं। अप्रैल के अन्त से जुलाई अन्त तक चिड़ियाँ चींटियों की ओर आकर्षित होती दिखीं। (ये अवलोकन हैं एच.आर. आइवर के।)

ऐसे अवलोकन तुम भी कर सकते हो। अपने घर के आसपास जहाँ चिड़ियों का जमघट लगता है वहाँ कुछ दिन लगातार जाकर देखना। फिर यही क्यों उनकी और भी हरकतें देखी जा सकती हैं। कॉपी में नोट करते जाना। भेज सको तो हमें भी भेज देना।

प्रस्तुति : के. आर. शर्मा

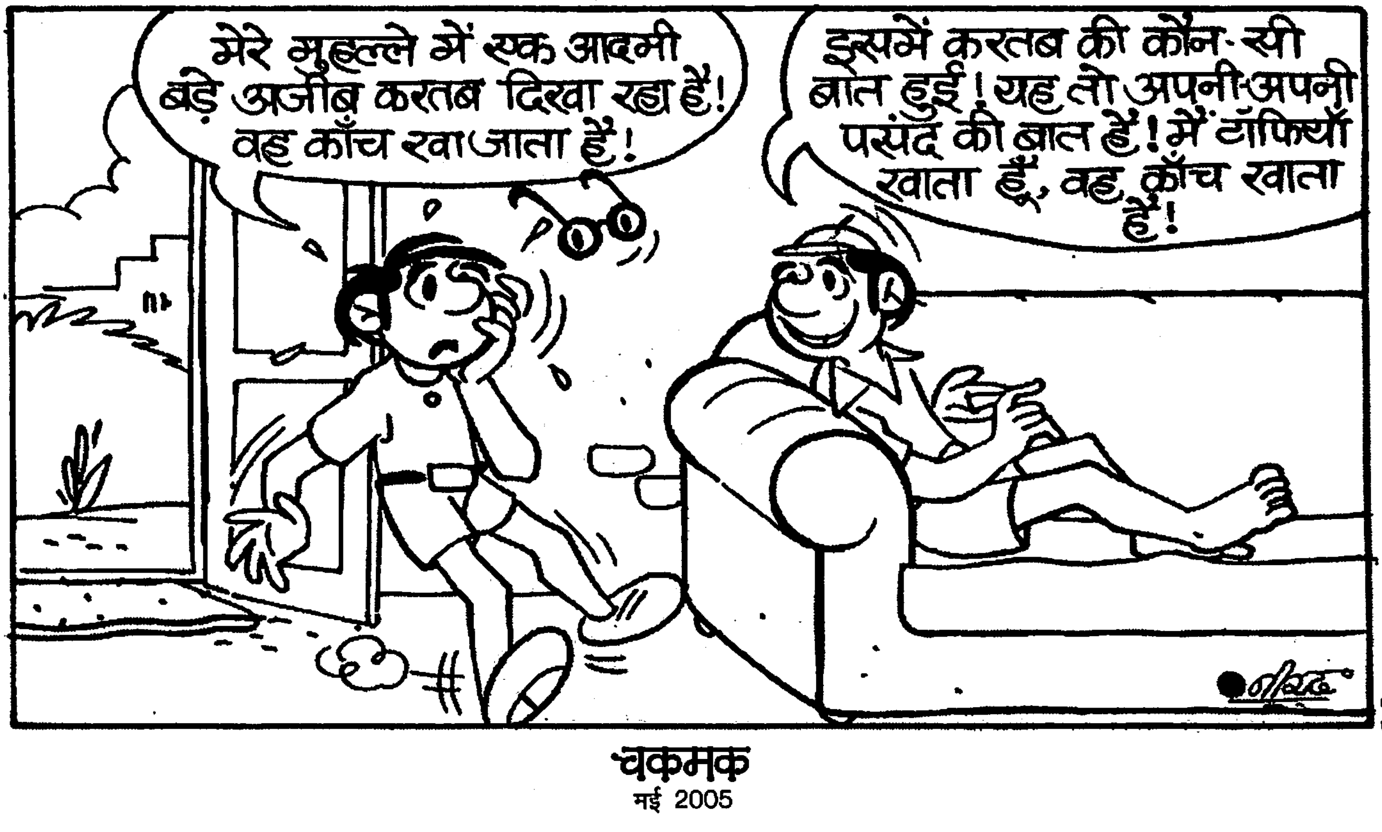

चित्र-पहेली

संकेत बाएँ से दाएँ

1	■	2		3	■	4	5	■
6			■	7		■		■
	■		■		■	8		9
■	10	■	11	12		■	■	
13				■	14		15	
	■	■	16	17		■		■
18	19		■		■	20	■	21
■		■	22		■	23		
■	24		■	25			■	

2

4

6

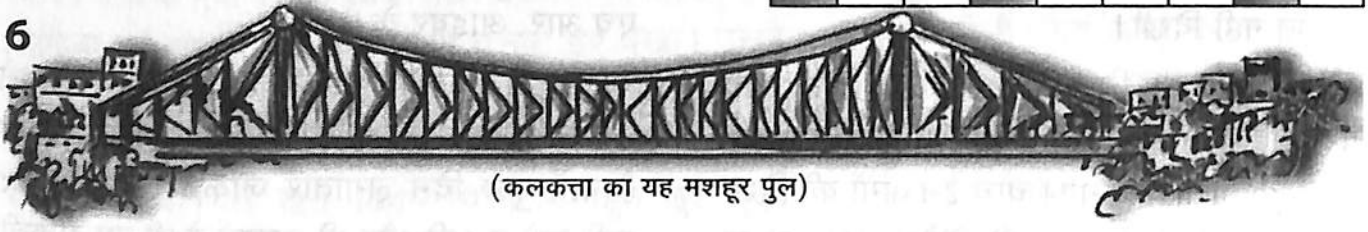

(कलकत्ता का यह मशहूर पुल)

7

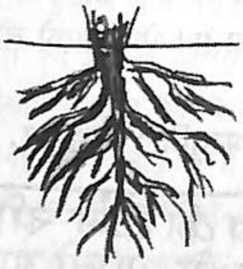

8 'मगर' में है ठण्डे का उल्टा

11 'नीला पर' में है दूध से बनने वाली चीज़

14 गुलाबी शहर...

13

16 'दादा-नानी' में है नासमझी

18

22

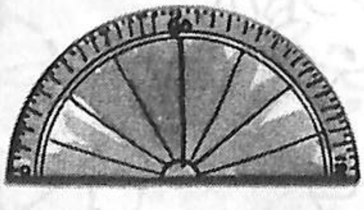

23

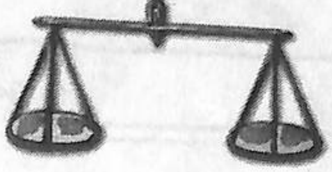

24

25

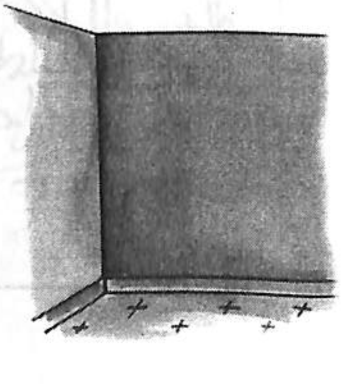

संकेत ऊपर से नीचे

1

2

3 दिल्ली है भारत की.......

5 रेखा, (.....का फकीर)

9

10

11 'टपकना' में है एक शहर

12 'नीरज' में रात

13

15

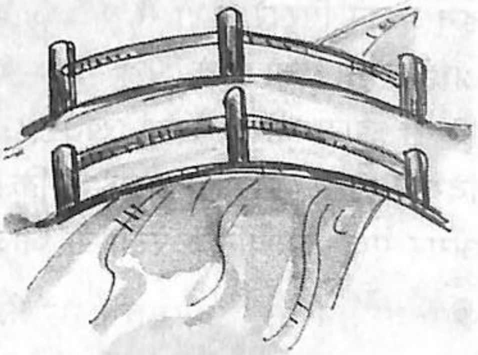

17 पापा के मम्मी-पापा

20

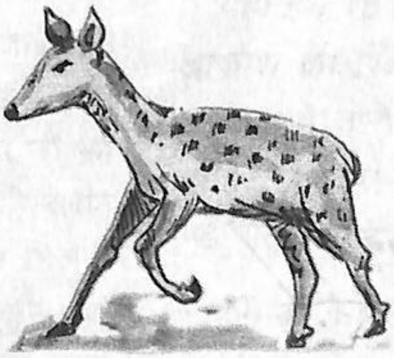

19

21

आसमान में कितने तारे!

आसमान...। इस एक शब्द में कितनी चीज़ें समाई हैं। कितने तारे, चाँद सूरज ... सब कुछ रहस्यमय-सा लगता है। कितने सवाल उठाता है आसमान हमारे मन में। तारे हैं तो कितने तारे हैं? कितने बड़े हैं? कौन हमसे कितनी दूर है? तारे कैसे बनते हैं? तारे क्या कभी खत्म भी होते हैं? तारे का टूटना क्या होता है? ऐसे ही कितने सवाल चाँद और सूरज के बारे उठते हैं। आकाश में चाँद और सूरज के अलावा और क्या-क्या होता है?

हज़ारों साल पहले हमारे पूर्वज भी आकाश ताका करते थे। कई दिनों ताकने के बाद उन्हें इन इखरे बिखरे तारों में कुछ आकृतियाँ नज़र आई होंगी। तारों के ऐसे गुच्छे या समूह जो किसी खास चीज़ जैसे दिखते हैं उसे वह नाम दिया। जैसे पाँच-छह तारों के किसी समूह को अगर एक काल्पनिक रेखा से जोड़ दिया जाए तो वह कैसे नज़र आएगा। अगले पन्ने पर ऐसे कुछ तारा समूह दिए गए हैं। उनके नाम से उनकी आकृति का मिलान करो। क्या वास्तव में उनके नाम उनकी आकृति से मेल खाते हैं।

क्या तुम्हें आकाश निहारने का शौक है?

आकाश को देखना एक फुरसत का काम है। इसमें बहुत इत्मीनान की जरूरत पड़ती है। रोशनी में आकाश उतना साफ हमें नहीं दिख पाता। इसलिए आकाश के नज़ारों का लुत्फ लेने के लिए शहर से थोड़ा बाहर जाना बेहतर होता है। अच्छा हो अगर तुम कोई ऊँची सी जगह ढूँढ पाओ। कुछ चीज़ें तो तुमने कई बार देखीं होंगी जैसे चाँद का घटना-बढ़ना। कभी खरबूजे की एक पतली-सी फाँक-सा दिखता है तो कभी यही फाँक कुछ मोटी हो जाती है। और कभी तो यह बर्फ के एक गोल-सा दिखने लगता है। ऐसे ही एक और परिचित चीज़ है ध्रुव तारा। तुमने

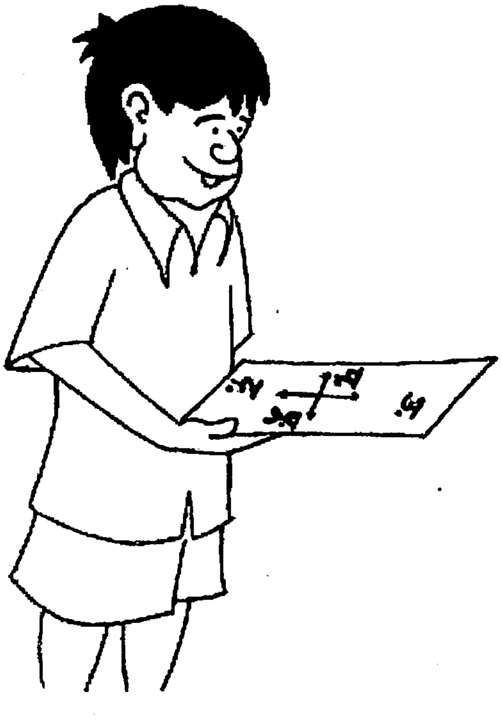

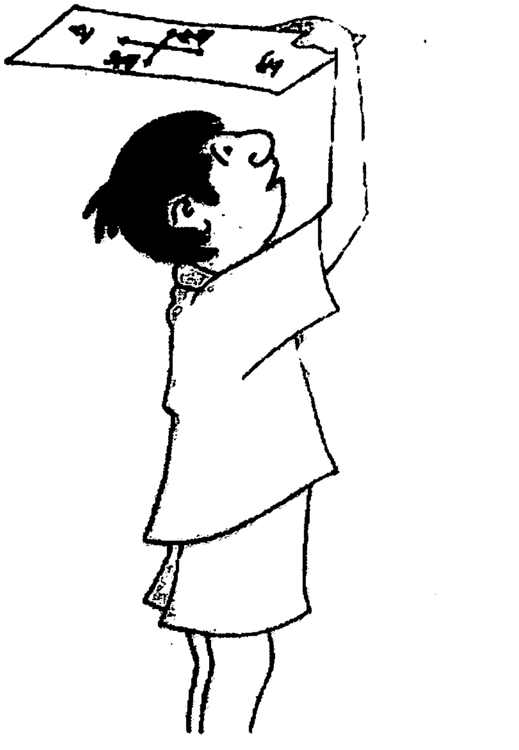

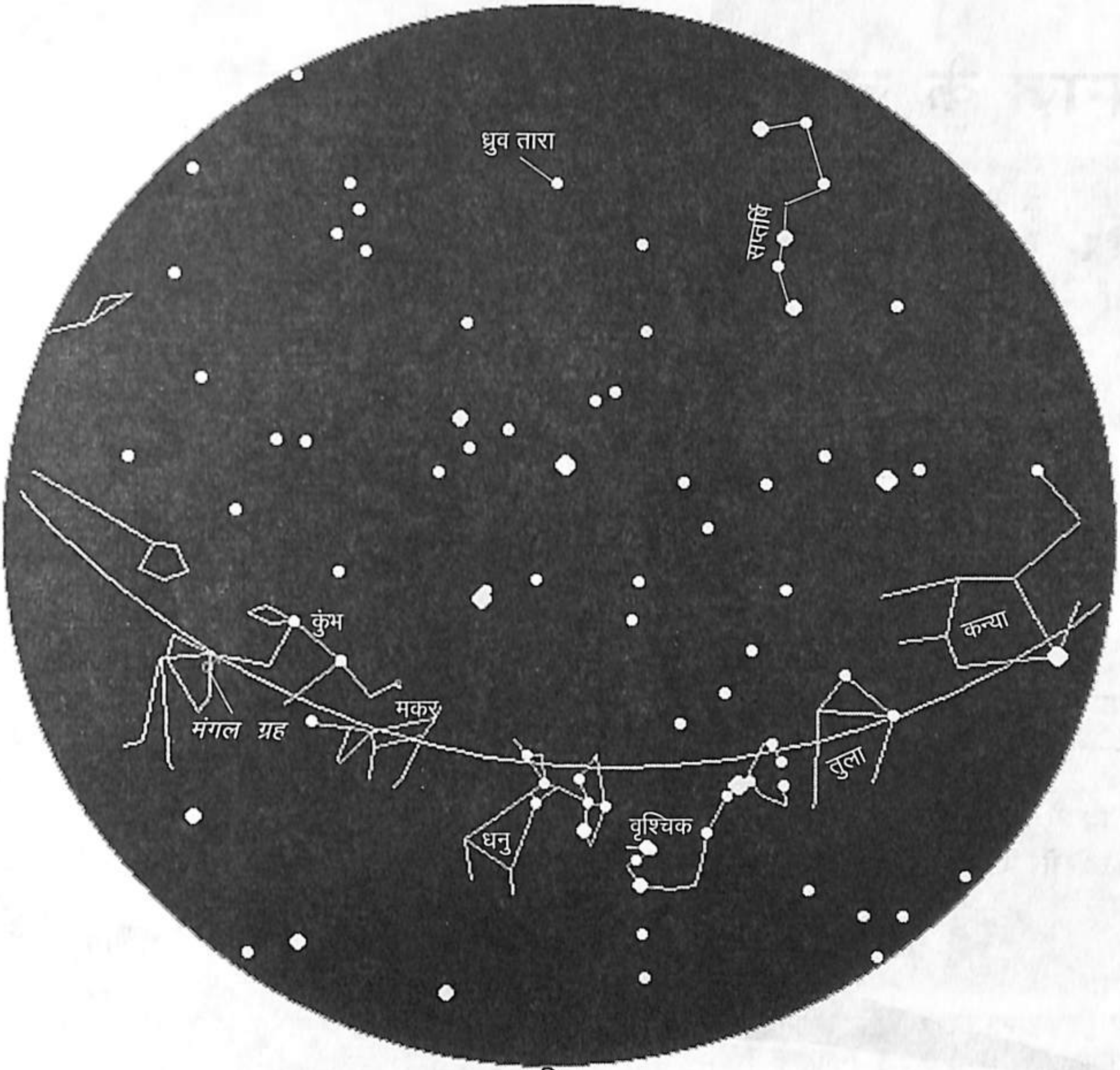

शायद अपनी किताबों में भी इसके बारे में पढ़ा होगा। इससे ही कई लोग आज भी उत्तर दिशा पता करते हैं। यह हमेशा उत्तर दिशा में दिखता है (चित्र -1 देखें)। इसकी पहचान सप्तर्षि नाम के तारा समूह से की जाती है। इस समूह में सात तारे होते हैं। सप्तर्षि के सामने के दो तारों को जोड़ने वाली रेखा को अगर उत्तर की तरफ बढ़ाया जाए तो वह ध्रुव तारे से जाकर मिलती है। चित्र में देखो। तुम अगर रोज़ कुछ देर आकाश दर्शन करोगे तो देखोगे कि सूरज सुबह से शाम तक आकाश में जिस रास्ते पर जाता दिखता है उसी रास्ते तुम्हें कई राशियाँ या तारा समूह नज़र आएँगे।

यहाँ हम 15 मई, रात 10 बजे के भोपाल के आकाश की स्थिति दे रहे हैं। तुम्हारे शहर में आकाश में तारों की स्थिति इससे छोड़ा अलग होगी। एक बात और 1 मई रात 11 बजे और 30 मई रात 9 बजे का आकाश भी ऐसा ही होगा।

तुम अपने बड़ों की मदद से इसे समझ सकते हो। इस चार्ट को सिर के ऊपर (चित्र में देखो) रखकर देखना। अपने अनुभव भेजना।

कागज़ के ज़ेवर

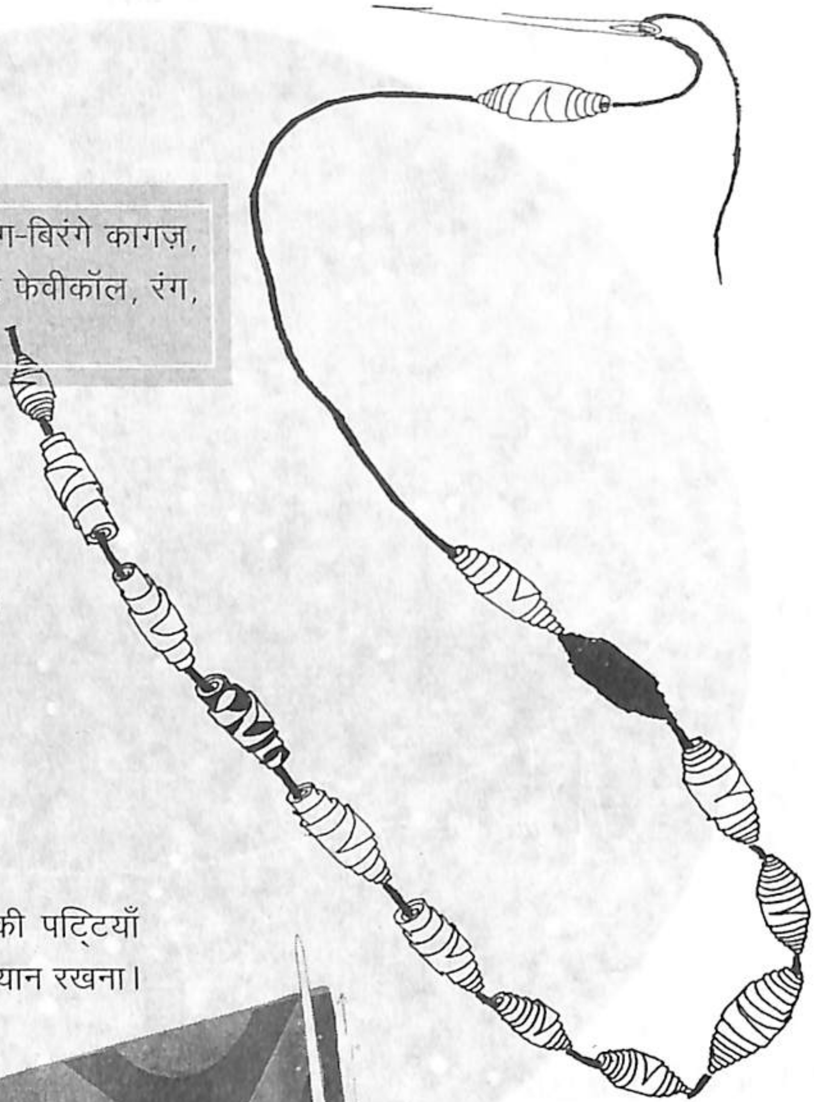

तुम्हें चाहिए होगा	पुरानी रंगीन किताब के पन्ने या रंग-बिरंगे कागज़, एक पेंसिल, कील, कैंची, गोंद या फेवीकॉल, रंग, मोटा धागा

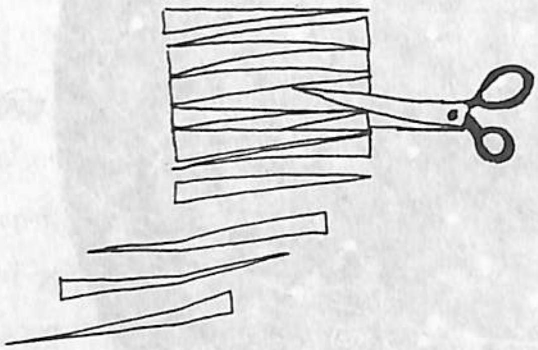

1. चित्र में दिए तरीके से रंगीन कागज़ की पट्टियाँ काट लो। पट्टियों के आकार का खास ध्यान रखना।

2. किसी पेंसिल या कील पर दिखाए गए तरीके से इन पट्टियों को लपेट दें। कागज़ के अंतिम सिरे पर गोंद लगा दो।

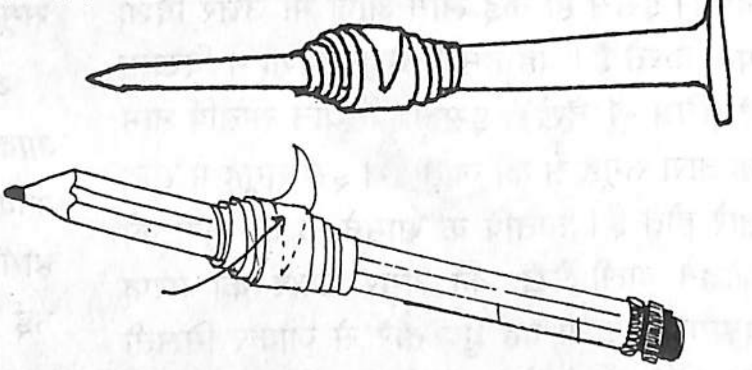

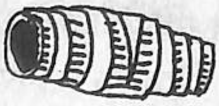

3. सूखने पर इन मोतियों को खींचकर निकाल लो। चाहो तो कुछ मोतियों को रंग लो। अब इन्हें मोटे धागे में पिरोकर माला, चूड़ी या कोई और सजावटी समान बना सकते हो।

ये हैं ट्री हॉपर। पेड़ों के तने से चिपककर मज़े से उसका रस पी रहे हैं। तने पर बैठे ये, कीड़े कम काँटे ज़्यादा लगते हैं। क्या मज़ाल कि किसी चिड़िया की नज़र इन पर पड़ पाए। क्या तुम पहचान पाए इन्हें!

छुपम छुपाई जान बचाई

यह कीट (*इंडियन लीफ बग*) केवल देखने में ही पत्ती सरीखा नहीं है बल्कि व्यवहार भी उसी तरह का करता है। पत्ती पर बैठा वह इस तरह आगे पीछे होता है ज्यों हवा के झोंके से झूम रहा हो।

इस मकड़ी (*ड्यून वोल्फ स्पाइडर*) की सुरक्षा के दोहरे इंतज़ाम हैं। एक तो यह सुरंग के भीतर रहती है। दूसरा, इसके शरीर के निशान इसे आसपास की रेत से अलग दिखने ही नहीं देते हैं।

दिन में यह कीट टहनियों के बगल में टहनी के एक हिस्से की तरह ही नज़र आता है। रात होते ही धीरे से पत्ती पर खिसककर उसे खाने लगता है।

साभार- अवर अमेज़िंग वर्ल्ड ऑफ नेचर

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05

सुमित शुक्ला, भोपाल, म.प्र.

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना